कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/143/2025-27 RNI No. 1832/57 डाक प्रेषण का दिन - सोमवार, मंगलवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 भोपाल, प्रकाशन - सोमवार, 1 दिसम्बर 2025 वर्ष-80 अंक - 14 मूल्य-रु. 12/- कुल पृष्ठ-16 www.krishakjagat.org पृष्ठ- 1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

अंदर पढ़िये...

9

कृषक जगत

मक्का के गिरते दामों से हाहाकार, किसान हुए लाचार

देश की ताकत गांव-पंचायतों में है : डॉ. यादव

भोपाल (कृषक जगत)। कुशाभाऊ ठाकरे सभागार भोपाल में आयोजित तीन दिवसीय 'आत्मनिर्भर पंचायत - समृद्ध मध्यप्रदेश' राज्य स्तरीय कार्यशाला में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि भारतीय चिंतन में गांव स्वराज और आत्मनिर्भरता की पहली इकाई है। पंचायतों को प्रशासनिक रूप से दक्ष, वित्तीय रूप से सक्षम और सामुदायिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

मुख्यमंत्री के प्रमुख संदेश

- पंचायतों को अधिक अधिकार - 25 लाख तक खर्च करने की मंजूरी।
- पंचायतों का मास्टर प्लान बने।
- पानी की व्यवस्था का अधिकार पंचायतों को।
- किसानों के लिए 90 प्रतिशत अनुदान पर सोलर पंप।

कार्यक्रम में उत्कृष्ट कार्य के लिए जिले एवं संस्थाओं को सम्मानित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव। इस अवसर पर पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रह्लाद पटेल एवं राज्यमंत्री श्रीमती राधा सिंह भी उपस्थित थीं।

वॉटरशेड महोत्सव का शुभारंभ और पुरस्कृत जिले- मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना- वॉटरशेड डेवलपमेंट 2.0 के तहत वॉटरशेड महोत्सव शुरू किया और उत्कृष्ट कार्य करने वाले जिलों व संस्थाओं को सम्मानित किया।

जल गंगा संवर्धन अभियान—श्रेष्ठ जिले

- प्रथम- खण्डवा
- द्वितीय- रायसेन
- तृतीय- बालाघाट

खेत-तालाब निर्माण-श्रेष्ठ जिले

- अनूपपुर
- बालाघाट

रबी 2025-26 प्रदेश में उर्वरक संकट या वितरण व्यवस्था की समस्या?

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल (कृषक जगत)। प्रदेश में उर्वरक की उपलब्धता भले ही पर्याप्त हो, लेकिन वितरण व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता स्पष्ट रूप से महसूस हो रही है। किसानों को समय पर उर्वरक की आपूर्ति न होने के कारण बुवाई में देरी हो रही है और आर्थिक नुकसान हो रहा है। ऐसे में यह आवश्यक है कि राज्य और केन्द्र सरकार दोनों मिलकर इन समस्याओं का समाधान करें और सुनिश्चित करें कि उर्वरक उचित दामों पर किसानों तक समय पर पहुंचे, ताकि उनकी फसल उत्पादन में कोई रुकावट न आए। प्रदेश में रबी 2025-26 सीजन के दौरान उर्वरक की कमी को लेकर किसानों में चिंता बढ़ी हुई है। हालांकि, सरकारी स्तर पर प्रदेश में उर्वरकों की पर्याप्त उपलब्धता का दावा किया जा रहा है, लेकिन जमीनी स्तर पर किसानों को खाद की आपूर्ति में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। खासकर, गुना, शिवपुरी और ग्वालियर-चंबल संभाग के किसानों को डीएपी और यूरिया के लिए लंबी कतारों में खड़ा होना पड़ रहा है।

किसानों का आरोप है कि उन्हें समय पर और जरूरत के अनुसार उर्वरक नहीं मिल रहे, जिसके कारण उनकी बुवाई प्रभावित हो रही है और आर्थिक नुकसान हो रहा है। दूसरी ओर, सरकार का कहना है कि प्रदेश में उर्वरकों की कोई कमी नहीं है और सभी आदान सामग्री पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराई जा रही है। जिला प्रशासन भी अपने स्तर पर उर्वरकों की उपलब्धता को लेकर आश्वस्त कर रहा है, लेकिन स्थिति में सुधार की उम्मीदें धुंधली दिखाई देती हैं।

किसानों के मुताबिक, मुख्य समस्या उर्वरक की उपलब्धता नहीं, बल्कि वितरण व्यवस्था की है। वे कहते हैं कि सहकारी समितियों में खाद की आपूर्ति कम है, जबकि निजी दुकानों पर उर्वरक ऊंचे दामों में बिक रहे हैं, जिससे कालाबाजारी का खतरा उत्पन्न हो गया है। ऐसी स्थिति में किसानों को बाजार में दामों का सामना करना पड़ रहा है, जो उनकी आर्थिक स्थिति को खराब कर रहा है।

वहीं, सरकार का दावा है कि उसने उर्वरक की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित की है और उसकी उपलब्धता के लिए एक नई वितरण व्यवस्था लागू की गई है। इस व्यवस्था के तहत, सब्सिडी प्रदान करने और नई वितरण पद्धतियों के माध्यम से किसानों को समय पर खाद उपलब्ध कराने के प्रयास किए जा रहे हैं। (शेष पृष्ठ 3 पर)

कृषि और बागवानी—दोनों में रिकॉर्ड बढ़ोतरी

खरीफ उत्पादन 38.70 लाख टन बढ़ा, बागवानी उत्पादन 3690 लाख टन के पार

नईदिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने गत सप्ताह खरीफ 2025-26 की प्रथम अग्रिम अनुमान रिपोर्ट और बागवानी 2024-25 की तृतीय अग्रिम अनुमान रिपोर्ट जारी करते हुए बताया कि कृषि-बागवानी दोनों क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति दर्ज हुई है।

खरीफ 2025-26: कुल खाद्यान्न 1733.30 लाख टन का अनुमान

चावल: 1245.04 लाख टन (17.32 लाख टन अधिक), **मक्का :** 283.03 लाख टन (34.95 लाख टन अधिक), **मोटा अनाज:** 414.14 लाख टन, **दलहन :** 74.13 लाख टन (तूर 35.97 लाख टन, उड़द 12.05, मूंग 17.20), **तिलहन :** 275.63 लाख टन (मूंगफली 110.93, सोयाबीन 142.66), **गन्ना:** 4756.14 लाख टन, **कपास:** 292.15 लाख गांठें। श्री चौहान ने कहा कि अनुकूल मानसून और तकनीकी प्रगति से प्रमुख खरीफ फसलों में व्यापक बढ़ोतरी का अनुमान है।

बागवानी 2024-25: उत्पादन बढ़कर 3690.55 लाख टन

कुल बागवानी क्षेत्रफल : 294.88 लाख हेक्टेयर (+4 लाख हेक्टेयर), **कुल उत्पादन :** 3690.55 लाख टन (+143.11 लाख टन)

फल और सब्जियों में जोरदार वृद्धि

फल: 1187.60 लाख टन (+5.12%)
सब्जियाँ: 2156.84 लाख टन (+4.09%)
प्याज : 307.89 लाख टन (+26.88%)
टमाटर: 194.68 लाख टन
आलू: 581.08 लाख टन

अन्य बागवानी फसलें

सुगंधित व औषधीय पौधे: 7.81 लाख टन
मसाले: 125.03 लाख टन (लहसुन, अदरक, हल्दी में वृद्धि).

संसद का शीतकालीन सत्र 1 दिसम्बर से

नई दिल्ली। संसदीय कार्य मंत्री श्री किरेन रिजिजू ने बताया कि संसद का शीतकालीन सत्र 1 से 19 दिसंबर तक चलेगा। श्री रिजिजू ने बताया कि राष्ट्रपति ने सरकार के शीतकालीन सत्र के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। संसद का ये सत्र अन्य सत्रों के मुकाबले छोटा होगा।

देश में गेहूं बुवाई ने पकड़ी रफ्तार

अब तक 306 लाख हेक्टेयर में हुई रबी बोनी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। देश में रबी फसलों की बुवाई इस वर्ष तेज रफ्तार से आगे बढ़ रही है। कृषि मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, 21 नवंबर 2025 तक कुल 306.31 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बुवाई पूरी की जा चुकी है। यह आंकड़ा पिछले वर्ष की इसी अवधि के 272.78 लाख हेक्टेयर की तुलना में 33.53 लाख हे. अधिक है। वहीं गेहूं की बोनी 128 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में कर ली गई है जबकि गत वर्ष समान अवधि में 107 लाख हेक्टेयर हुई थी।

इस वर्ष देश की प्रमुख रबी फसल गेहूं का क्षेत्र बढ़कर 128.37 लाख हेक्टेयर हो गया है, जो पिछले वर्ष से 21.27 लाख हेक्टेयर अधिक है। गत समान अवधि में 107.09 लाख हेक्टेयर में गेहूं बोया गया था। उधर धान की बुवाई भी 8.26 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गई, जो गत वर्ष समान अवधि में 7.59 लाख हेक्टेयर में बोई गई थी।

दलहन

दालों की बुवाई ने इस सीजन में विशेष बढ़त दर्ज की है। दालों के कुल रकबे में 5.21 लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई और यह बढ़कर 73.36 लाख हेक्टेयर पर पहुंच गया है। चना 53.71 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया, जिसमें 4.41 लाख हेक्टेयर की बढ़त दर्ज हुई।

मोटा अनाज

सरकार द्वारा प्रोत्साहित की जा रही 'श्री अन्न' (मिलेट्स) श्रेणी में भी ठोस वृद्धि देखी गई। इन फसलों के तहत क्षेत्र बढ़कर 19.69 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 17.26 लाख हेक्टेयर था।

तिलहन

तिलहन फसलों की बुवाई में इस वर्ष अच्छा सुधार देखने को मिला है और कुल क्षेत्रफल में 3.94 लाख हेक्टेयर की वृद्धि दर्ज की गई है। तिलहनों में सबसे अधिक बढ़ोतरी रेपसीड और सरसों में हुई, जिनका क्षेत्र बढ़कर 73.80 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है-यह पिछले वर्ष समान अवधि में 72.69 लाख हेक्टेयर था।

प्रमुख रबी फसलों की बुवाई
21 नवम्बर 2025 की स्थिति (लाख हे. में)

फसल	सामान्य क्षेत्र	बुवाई 2025-26	बुवाई 2024-25
गेहूँ	**312.35**	**128.37**	**107.09**
चावल	**42.93**	**8.26**	**7.59**
दालें	**140.42**	**73.36**	**68.15**
चना	100.99	53.71	49.30
मसूर	15.13	9.01	8.57
मोटे अनाज	**55.33**	**19.69**	**17.26**
ज्वार	24.62	8.99	8.43
मक्का	23.61	6.57	5.38
तिलहन	**86.78**	**76.64**	**72.69**
सरसों	79.17	73.80	69.58
मूंगफली	3.69	1.12	1.27
अलसी	1.93	0.98	1.39
कुल	**637.81**	**306.31**	**272.78**

नोट : कुल क्षेत्रफल के आंकड़े चार्ट से अलग हैं, क्योंकि सभी फसलों को चार्ट में शामिल नहीं किया गया है।
स्रोत : कृषि मंत्रालय

हरित ईंधन और महिला-अनुकूल मशीनें-भारत की नई खेती का भविष्य

EIMA Agrimach India 2025

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारत की कृषि को 2047 के विजन के अनुरूप आधुनिक, टिकाऊ और श्रम-सहज बनाने के लिए हरित ऊर्जा आधारित मशीनरी और महिला किसानों के लिए जेंडर-फ्रेंडली उपकरण अनिवार्य हैं। यह संदेश केंद्रीय कृषि सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी ने EIMA Agrimach India 2025 के उद्घाटन सत्र में दिया। राष्ट्रीय कृषि अखबार कृषक जगत एवं ग्लोबल एग्रीकल्चर मैगज़ीन इस कार्यक्रम के मीडिया पार्टनर थे।

इलेक्ट्रिक और CBG ट्रैक्टर—भारत की भविष्य की खेती

डॉ. चतुर्वेदी ने कहा कि अगले 5-10 वर्षों में कृषि मशीनरी को इलेक्ट्रिक एवं कम्प्रेस्ड बायोगैस (CBG) जैसे हरित ईंधनों की ओर तेजी से स्थानांतरित करना होगा।उन्होंने बताया कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर और CBG आधारित मशीनरी किसानों की रखरखाव व परिचालन लागत में उल्लेखनीय कमी लाएगी।

मंत्रालय भी भविष्य की नीतियों में ऐसी तकनीकों को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

महिला किसानों के लिए 'श्रम-कम' करने वाली मशीनें जरूरी

महिला किसानों को कृषि की 'रीढ़' बताते हुए उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2026 को अंतरराष्ट्रीय महिला किसान वर्ष घोषित किए जाने के बाद उद्योग की जिम्मेदारी और बढ़ गई है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जेंडर बजटिंग का अर्थ केवल स्वामित्व नहीं, बल्कि ऐसे उपकरण उपलब्ध कराना है जो उनका शारीरिक बोझ कम कर सकें—चाहे वे मैनुअल हों या मोटरचालित।

भारत-इटली कृषि सहयोग का नया दौर

भारत में इटली के राजदूत एंटोनियो बार्टोली ने बताया कि कृषि सहयोग बढ़ाने के लिए जल्द ही नई दिल्ली स्थित दूतावास में अग्रि-अताशे नियुक्त करने की दिशा में काम चल रहा है।

उन्होंने कहा कि करीब 20 इतालवी कंपनियां भारत में उत्पादन कर रही हैं तथा इस संख्या को बढ़ाने की योजना है। दोनों देशों ने द्विपक्षीय व्यापार को 20 अरब यूरो तक ले जाने का लक्ष्य रखा है।

कृषि को 'सेवा' के रूप में विकसित करने की जरूरत

आयोजन समिति के चेयरमैन एवं TAFE के बोर्ड निदेशक टी.आर. केसवन ने कहा कि सीडर जैसे महंगे उपकरणों का उपयोग किसानों द्वारा केवल कुछ दिनों के लिए किया जाता है, इसलिए कृषि को सेवा-आधारित मॉडल पर ले जाना होगा। ऐसे मॉडल में किसान उपकरणों को किराये पर लेकर उत्पादन लागत घटा सकेंगे।

भारत में मशीनीकरण बाजार दोगुना होने की ओर

फेडेरुनाकोमा की महानिदेशक सिमोना रापास्तेला ने बताया कि भारत का कृषि मशीनीकरण बाजार 2023 में 13.7 बिलियन डॉलर था, जो 2033 तक 31.6 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। भारतीय-इतालवी साझेदारी इस वृद्धि में अहम भूमिका निभाएगी।

पे-पर-यूज मॉडल से मशीनीकरण में आएगी रफ्तार

कार्यक्रम में FICCI–PwC की संयुक्त रिपोर्ट 'Farm Mechanisation: The Path Towards a Future-Ready India' जारी की गई। PwC के पार्टनर शशि कांत सिंह ने कहा कि व्यक्तिगत स्वामित्व के बजाय पे-पर-यूज मॉडल अपनाने से देशभर में मशीनीकरण और तेजी से बढ़ सकेगा।

इटैलियन ट्रेड एजेंसी की उप-आयुक्त सबरीना मंगियालावोरी ने बताया कि भारतीय किसान जुताई, बुवाई, सिंचाई, फसल संरक्षण और थ्रेसिंग जैसे आधुनिक समाधानों को तेजी से अपना रहे हैं। Corteva Agriscience के दक्षिण एशिया अध्यक्ष सुब्रत गीड ने कहा कि 2050 तक वैश्विक जनसंख्या 1000 करोड़ तक पहुंच सकती है, जिसमें भारत की सबसे बड़ी हिस्सेदारी होगी। ऐसे में मशीनीकरण ही उत्पादन बढ़ाने का सबसे प्रभावी रास्ता है।

1.34 लाख किसानों को मिली 249 करोड़ भावान्तर राशि

भोपाल (कृषक जगत)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि किसान भाई हमारे अन्नदाता हैं। वे तरह-तरह के जोखिम उठाकर समाज और देश के लिए अन्न-धन का भंडार भरते हैं। मुख्यमंत्री इंदौर जिले के गौतमपुरा में आयोजित समारोह को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोयाबीन की फसल पर भावान्तर भुगतान योजना के तहत प्रदेश के 1.34 लाख पात्र किसानों के बैंक खातों में सिंगल क्लिक से 249 करोड़ रुपये अंतरित किये। अब तक प्रदेश के 4.39 लाख से अधिक किसानों द्वारा 7.85 लाख मीट्रिक टन सोयाबीन फसल का विक्रय किया जा चुका है।

म.प्र. विधानसभा का सत्र 1 दिसम्बर से

भोपाल। म.प्र. विधान सभा का सातवां सत्र 1 दिसम्बर से शुरू होकर 5 दिसम्बर 2025 तक चलेगा। राज्यपाल ने सत्र की अधिसूचना जारी कर दी है। विधानसभा के प्रमुख सचिव श्री अरविन्द शर्मा के मुताबिक 5 दिवसीय इस सत्र में कुल 4 बैठकें होगी, जिसमें महत्वपूर्ण शासकीय कार्य संपादित किए जाएंगे।

श्री राजन को एसीएस जनसंपर्क का अतिरिक्त प्रभार

भोपाल। राज्य शासन ने श्री अनुपम राजन अपर मुख्य सचिव उच्च शिक्षा, उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण तथा संसदीय कार्य (अति. प्रभार) को अपने वर्तमान कर्तव्यों के साथ-साथ जनसंपर्क का अतिरिक्त प्रभार सौंपा है।

श्री जायसवाल अपर संचालक : वहीं एक अन्य आदेश में शासन ने राज्य प्रशासनिक सेवा के उपायुक्त (राजस्व) नर्मदापुरम संभाग श्री गणेश कुमार जायसवाल को अपर संचालक जनसंपर्क संचालनालय भोपाल में पदस्थ किया है। परन्तु अपर संचालक की इस नियुक्ति को लेकर जनसंपर्क विभाग में प्रदेशव्यापी रोष व्याप्त है। जनसंपर्क अधिकारी विरोध कर रहे हैं।

प्रदेश में रबी का रकबा 96 लाख हेक्टेयर से अधिक हुआ

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल (कृषक जगत)। प्रदेश में चालू रबी सीजन 2025-26 में अब तक 96 लाख 50 हजार हेक्टेयर में बोनी हो गई है। जबकि गत वर्ष इस अवधि में 97.56 लाख हेक्टेयर में बोनी हुई थी। राज्य की प्रमुख फसल गेहूं की बोनी अब तक 66.07 लाख हेक्टेयर में हो गई है। जो लक्ष्य के विरुद्ध 68 फीसदी है। इस वर्ष रबी फसलों का लक्ष्य 138.85 लाख हेक्टेयर रखा गया है। अब तक लक्ष्य के विरुद्ध कुल रबी बोनी 69 फीसदी पूरी हो गई है।

प्रमुख फसल चने की बोनी अब तक 11.59 लाख हेक्टेयर में हो गई है जो गत वर्ष समान अवधि में 116.07 लाख हे. में हुई थी। अन्य फसलों में अब तक मटर 2.38 लाख हे. में, मसूर 4.92 लाख हेक्टेयर में बोई गई है। राज्य की प्रमुख तिलहनी फसल सरसों की बोनी 10.33 लाख हेक्टेयर में हुई है जबकि गत वर्ष समान अवधि में 11.77 लाख हेक्टेयर में बोनी हो गई थी।

रबी फसलों की बुवाई
28 नवम्बर 2025 तक (लाख हे. में)

फसल	लक्ष्य	बुवाई
गेहूं	96.81	66.07
जौ	0.34	0.21
चना	17.28	11.59
मटर	3.30	2.38
मसूर	6.36	4.92
सरसों	12.23	10.33
अलसी	1.20	0.59
गन्ना	1.33	0.41

प्रदेश में उर्वरक संकट...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रबी 2025-26 के लिए उर्वरक की मांग

मध्यप्रदेश में रबी सीजन 2025-26 के लिए कुल 49 लाख मीट्रिक टन उर्वरक की मांग की गई है, जिसमें यूरिया (23 लाख टन), एसएसपी (6.50 लाख टन), डीएपी (7.50 लाख टन) और काम्पलेक्स उर्वरक (11.50 लाख टन) शामिल हैं। इस साल नवम्बर में कुल 14.75 लाख मीट्रिक टन उर्वरक की जरूरत है, जिसमें यूरिया की मांग 8 लाख मीट्रिक टन, डीएपी की 2 लाख मीट्रिक टन, एमएसपी की 1.50 लाख मीट्रिक टन और काम्पलेक्स उर्वरक की 3 लाख मीट्रिक टन है। दिसम्बर में उर्वरकों की आवश्यकता और बढ़ने की उम्मीद है, जिसमें यूरिया की 1.50 लाख टन, डीएपी और एसएसपी की 1-1 लाख टन, और काम्पलेक्स की 2 लाख टन की मांग होगी।

केन्द्र का दावा

केन्द्रीय सरकार ने इस मामले में दावा किया है कि देशभर में रबी सीजन के लिए कुल 185.39 लाख मीट्रिक टन उर्वरकों की जरूरत है, जबकि 230.53 लाख मीट्रिक टन उर्वरक उपलब्ध है, जो कि बिक्री से कहीं अधिक है। किसानों ने खरीफ 2025 में खरीफ 2024 की तुलना में लगभग 4.08 लाख मीट्रिक टन अधिक यूरिया का इस्तेमाल किया है। इसके बावजूद, यूरिया स्टॉक में अक्टूबर के पहले सप्ताह से लेकर 31 अक्टूबर तक 20.21 लाख मीट्रिक टन की बढ़ोतरी देखी गई है।

राज्य सरकार का कदम

प्रदेश सरकार ने किसानों को उर्वरक उचित दामों पर उपलब्ध कराने के लिए मार्कफेड के जरिए रबी सीजन के लिए विक्रय दरें तय की हैं। राज्य में बुवाई लगभग 96 लाख हेक्टेयर से भी अधिक क्षेत्र में हो चुकी है, और यह सरकार की वितरण व्यवस्था की सफलता का संकेत हो सकता है, लेकिन जमीनी स्तर पर जो समस्याएँ सामने आ रही हैं, उन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

मार्कफेड द्वारा चुनिंदा उर्वरकों की रबी 2025-26 की विक्रय दर

खाद	प्रति बोरी
समस्त प्रदायकों के लिए	
• नीमकोटेड यूरिया (45 किग्रा)	266.50
• नैनो यूरिया (मात्रा 500 मिली में) इफको/मेघमनी	225.00
• नैनो डीएपी (मात्रा 500 मिली में) इफको/पीपीएल	600.00
नैनो डीएपी (मात्रा 1 ली में) कोरोमण्डल	600.00
• डीएपी	1350.00
• एनपीके 12:32:16 इफको अन्य समस्त प्रदायक	1900.00
• एनपीके 20:20:0:13 चंबल एवं एनएफएल	1400.00
• यूरिया अमो. फास्फेट (20:20:0)	1400.00
• यूरिया एसएसपी (5:15:0:10)	700.00
• सिंगल सुपर फॉस्फेट पाउडर	465.00
• सिंगल सुपर फॉस्फेट दानेदार	505.00

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली
जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला - सभी फसलों# के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।
(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानें आदि के लिए)

जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेव्हर
5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी)
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो एक्सेल प्लस
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो लाईन सुपर
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज

जैन टर्बो लाईन - पीसी
क्लास २
साईज - १६, २० मिमी

जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी
१३, १५ मील (०.33, ०.38 मिमी) - क्लास 1 व 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर्स
साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी

नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटींग में उपलब्ध

जैन ड्रिप® प्रति बूँद, फसल भरपूर!®
जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि. छोटे छोटे कदम, आसमान छूने का दम!®
दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाईट: www.jains.com

ड्रिपलाईन व फिटींग्ज | ड्रिपर्स | रेनपोर्ट स्प्रिंकलर | स्प्रे हेड व जेटस् | वॉल्व | फिल्टर्स | फिल्ट्रेशन संसाधन | फर्टिगेशन संसाधन | पीव्हीसी पाईप व फिटींग्ज | एचडीपीई पाईप्स व फिटींग्ज | क्विक कनेक्ट पाइप | ऑटोमेशन व कन्ट्रोलर्स

सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक **विजय कुमार बोन्द्रिया** द्वारा 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल से प्रकाशित एवं कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, भोपाल (मध्य प्रदेश) से मुद्रित, **सम्पादक : सुनील गंगराड़े,** फोन : 0755-4248100, 2554864, फैक्स : 0755-2571449. E-mail-info@krishakjagat.org इस अंक का मूल्य रु. 12/- वार्षिक शुल्क रु. 600/-.भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रमांक 1832/57

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

सज्जन से की गई प्रार्थना कभी निष्फल नहीं होती।
- महाकवि कालिदास

दस्तावेज़ों की विसंगतियाँ : ग्रामीण भारत की अनसुनी पीड़ा

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी भू-राजस्व ऋण पुस्तिका (B-1/खसरा) में वही नाम दर्ज पाए जाते हैं जो प्रचलन में रहे-भले ही वे मात्राओं, उच्चारण या वर्तनी की दृष्टि से गलत ही क्यों न हों। नई पीढ़ी की साक्षरता बढ़ने से अब स्कूल प्रमाण-पत्र के अनुरूप नाम दर्ज कराने की प्रवृत्ति बढ़ी है, लेकिन चालीस-पचास वर्ष से अधिक आयु वाले किसानों के दस्तावेज़ों में प्रचलित नामों की त्रुटियाँ आज भी आम हैं। इन त्रुटियों के कारण दस्तावेज़ों में असमानता बनी रहती है, और उन्हें ठीक करवाना अक्सर किसानों के लिए चुनौतियों से भरा होता है।

सितंबर 2010 में जब आधार पंजीयन की शुरुआत हुई, तब बड़ी संख्या में नामों में गलतियाँ हुई, जिन्हें ठीक कराने में वर्षों लगे। दुर्भाग्य से यह समस्या आज भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। खेतों के कागज़ों और आधार में नाम का अंतर, परिवार के मुखिया की मृत्यु पर उत्तराधिकार दर्ज करते समय पटवारी स्तर पर होने वाली त्रुटियाँ, मात्राओं का गलत लिखना तथा ग्रामीणों द्वारा बताए गए उपनाम या लघुनाम को ही दर्ज कर देना-ये सभी कारण आगे चलकर किसान के लिए परेशानी का कारण बनते हैं।

राजू, मधु, मुन्नू जैसे घरेलू लघुनाम अक्सर रिकॉर्ड में वास्तविक नाम के स्थान पर चढ़ जाते हैं। जब किसान को किसान क्रेडिट कार्ड बनवाना हो या किसी सरकारी लाभ का

आवेदन करना हो, तब दस्तावेज़ों के नाम मेल न खाने पर उन्हें बार-बार तहसील और बैंक के चक्कर लगाने पड़ते हैं। इस प्रक्रिया में समय के साथ मानसिक उत्पीड़न भी झेलना पड़ता है।

आज आधार केवल पहचान पत्र नहीं, बल्कि बैंकिंग, छात्रवृत्ति, सरकारी योजनाओं, परीक्षाओं और सार्वजनिक सेवाओं तक पहुँच का मूल आधार बन चुका है। ऐसे में सभी दस्तावेज़ों-आधार, पैन कार्ड, स्कूल अंकसूची, भू-राजस्व रिकॉर्ड-में नाम और जन्मतिथि का समान होना अत्यंत आवश्यक है। शहरी क्षेत्रों में जागरूकता अधिक होने से यह सुधार अपेक्षाकृत सरल है, परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति अभी भी चुनौतीपूर्ण है।

ग्रामीणों-विशेषकर किसानों के लिए दस्तावेज़ों में एकरूपता सुनिश्चित करना अब एक अनिवार्य प्रशासनिक सुधार होना चाहिए। इसके लिए बड़े पैमाने पर अभियान चलाने की आवश्यकता है, ताकि नामों और जन्म तिथियों में असमानता दूर हो और किसान योजनाओं का लाभ सहजता से प्राप्त कर सकें।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे हैं और ग्रामीण जीवन की वास्तविकताओं से भली-भाँति परिचित हैं। उनके पास इस दिशा में व्यापक सुधार करने का अवसर और अधिकार, दोनों हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में दस्तावेज़ सुधार अभियान शुरू करवाकर वे करोड़ों किसानों की प्रशासनिक समस्याओं को अत्यंत हद तक सरल कर सकते हैं।

यह पहल केवल सुविधा नहीं, बल्कि किसान सम्मान और सुशासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगी।

पर्यावरण और स्वास्थ्य की राह

क्यों जरूरी है वनस्पति-आधारित आहार ?

ज्ञान चंद पाटनी

जलवायु परिवर्तन से निपटने के वैश्विक प्रयास अपेक्षित परिणाम नहीं दे पा रहे, जबकि उपभोक्तावादी जीवनशैली ग्रीनहाउस गैसों को और बढ़ा रही है। वैज्ञानिकों के अनुसार पादप-आधारित आहार अपनाना उत्सर्जन घटाने का प्रभावी तरीका है। पेड़-पौधों पर आधारित खाद्य पदार्थ न केवल पर्यावरण को बचाते हैं, बल्कि मानव स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाते हैं, जिससे स्थायी विकास की राह सुगम होती है।

जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर लगातार प्रयास हो रहे हैं, लेकिन कोई खास सफलता नहीं मिल पा रही। आधुनिक विकास की परिभाषा और उपभोक्तावाद के चलते ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित करना अब भी बड़ी चुनौती है। इस दौर में पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली को अपनाना जरूरी हो गया है। इसके लिए आमजन को खुद भी जागरूक होना पड़ेगा। खानपान की आदतों को पर्यावरण अनुकूल बनाकर हम जलवायु परिवर्तन के खतरे को कम करने में अपना योगदान दे सकते हैं। इस बात को समझना होगा कि पेड़-पौधों पर आधारित खाद्य पदार्थों को बढ़ावा देने से जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटना संभव है और यह इंसानों के स्वास्थ्य के लिए भी बेहतर है।

संयुक्त राष्ट्र के जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आईपीसीसी) की रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि मांस और अन्य पशु उत्पादों की बजाय वनस्पति-आधारित आहार अपनाने से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में काफी कमी आती है। इससे वैश्विक तापमान वृद्धि को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। इसके साथ ही ऐसे आहार से हृदय रोग, टाइप 2 मधुमेह जैसे रोगों का जोखिम भी कम होता है, जिससे इंसानी सेहत में भी सुधार होता है।

असल में पशु ग्रीनहाउस गैसों के बड़े स्रोतों में से एक हैं। मवेशी मीथेन जैसी गैसों का उत्सर्जन करते हैं, जो तापमान में कार्बन डाइऑक्साइड से कई गुना अधिक वृद्धि करती हैं। मीथेन का उत्पादन पशुओं की सामान्य पाचन प्रक्रिया का हिस्सा है और पशु आधारित खाद भी मीथेन उत्सर्जन को बढ़ावा देती है।

पेड़-पौधे यानी पादप आधारित खाद्य पदार्थों के उत्पादन में पशु आधारित उत्पादों की तुलना में कम भूमि, कम पानी और कम ऊर्जा की आवश्यकता होती है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव कम होता है। विभिन्न रिपोर्टों से यह भी पता चलता है कि 2050 तक अगर मांस और डेयरी की खपत में उल्लेखनीय कमी आ जाए और लोग केवल पादप-आधारित खाद्य पदार्थों को अपनाएं, तो ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 70 प्रतिशत तक की आश्चर्यजनक कमी हो सकती है।

पादप आधारित आहार एक संतुलित और पौष्टिक आहार माना जाता है, जो शरीर को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करता है। इस आहार में फलों, सब्जियों, दालों, मेवों और साबुत अनाज की प्रचुर मात्रा होती है, जो शरीर को कैंसर, उच्च रक्तचाप और मोटापे जैसी बीमारियों से बचाते हैं।

कई प्रमुख रिपोर्टों और सर्वेक्षणों से पता चलता है कि पादप आधारित आहार अपनाने वाले लोगों की संख्या बढ़ रही है और यह प्रवृत्ति भविष्य में और भी तेज हो सकती है। संयुक्त राष्ट्र, विश्व स्वास्थ्य संगठन और विश्व बैंक सहित कई अंतरराष्ट्रीय संस्थान पादप आधारित आहार को जलवायु परिवर्तन से लड़ने में एक प्रभावी उपाय मानते हैं। पशु आधारित उत्पादों के कारण पैदा होने वाली मीथेन को कम करने के लिए न्यूज़ीलैंड और डेनमार्क जैसे कुछ देशों ने कर नीति भी लागू करने की योजना बनाई है, ताकि लोग मांस की बजाय पादप आधारित आहार की ओर बढ़ें। पर्यावरणीय हितों के कारण विश्वभर में शाकाहार ही नहीं, वीगन आहार की तरफ भी झुकाव बढ़ रहा है। वीगन आहार एक ऐसा शाकाहारी आहार है जिसमें केवल पेड़-पौधों से प्राप्त खाद्य पदार्थ शामिल होते हैं। इसमें कोई भी पशु-उत्पाद जैसे मांस, मछली, डेयरी (दूध, दही, पनीर), अंडे और शहद आदि शामिल नहीं होते। यह आहार पशु-आधारित पदार्थों से मुक्त होता है।

इसमें दोराय नहीं है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए पशु आधारित आहार की बजाय पादप आधारित आहार को बढ़ावा देना होगा। पशु उत्पादों पर सब्सिडी को कम करने के साथ फलों, अनाज और सब्जियों की खेती को बढ़ावा देना जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य दोनों के लिहाज से आवश्यक है।

पेड़-पौधों पर आधारित खाद्य पदार्थों को बढ़ावा देकर न केवल पर्यावरण और जलवायु को संरक्षित किया जा सकता है बल्कि मानव स्वास्थ्य में भी सुधार किया जा सकता है। इसके जरिए प्राकृतिक संसाधनों की बचत, पर्यावरण संरक्षण तथा स्वास्थ्य सुधार संभव है। इसलिए, सरकारों, नीति निर्माताओं और समाज को इस दिशा में सार्थक कदम उठाने चाहिए। जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौती से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए सरकारों को तो सक्रियता दिखानी ही होगी, आम आदमी को भी इस कार्य में अपना योगदान देना होगा।

(सप्रेस)

कृषि महाविद्यालय खंडवा परिसर में

पर्यावरण संरक्षण और जैव विविधता के संरक्षक

शीशम के वृक्ष

मध्यप्रदेश में खंडवा कृषि महाविद्यालय के हरे-भरे परिसर में लगे शीशम के वृक्ष न केवल सौंदर्य का प्रतीक हैं, बल्कि यह वृक्ष पर्यावरण, कृषि और जैव विविधता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आज जब जलवायु परिवर्तन, भूमि क्षरण और जैव विविधता की हानि जैसे गंभीर मुद्दे सामने हैं, ऐसे में शीशम वृक्ष इन समस्याओं के समाधान का एक सशक्त प्राकृतिक माध्यम बनकर उभरा है।

- डॉ. दीपक हरि रानडे
- डॉ. स्मिता अग्रवाल
- डॉ. मनोज कुमार कुरील

कौन है शीशम वृक्ष

शीशम, जिसेइंडियन रोज़वुड (Indian Rosewood) कहा जाता है, एक कठोर, दीर्घायु और बहुउपयोगी वृक्ष है। यह फैबेसी कुल का सदस्य है। यह वृक्ष सामान्यतः 25-30 मीटर तक ऊँचा होता है और इसके पत्ते तीन भागों में विभाजित (ट्राइफोलेट) होते हैं। शीशम का प्राकृतिक आवास गंगा-यमुना के मैदानी क्षेत्रों से लेकर मध्य भारत तक फैला हुआ है।

कृषि में शीशम की उपयोगिता

भूमि संरक्षण : शीशम की गहरी जड़ें मिट्टी को बाँधकर रखती हैं, जिससे मिट्टी का बहना, झड़ना रुकता है।

नाइट्रोजन स्थिरीकरण: यह वृक्ष मिट्टी में नाइट्रोजन का स्तर बढ़ाता है, जिससे आसपास की फसलों की वृद्धि बेहतर होती है।

कृषि-वृक्षारोपण में सहायक: शीशम की छाया और पत्तियाँ खेतों का तापमान संतुलित रखती हैं, जिससे फसलों पर गर्मी का असर कम होता है।

लकड़ी एवं ईंधन का स्रोत : इसकी लकड़ी अत्यंत कठोर, टिकाऊ और दीमक-रोधी होती है, जिससे कृषि उपकरण, फर्नीचर, दरवाजे, खिड़कियाँ और ईंधन तैयार किए जाते हैं।

पशु चारे के रूप में उपयोग: शीशम की कोमल पत्तियाँ पशुओं के लिए पौष्टिक चारा हैं।

जैव विविधता में शीशम की भूमिका

शीशम वृक्ष न केवल कृषि के लिए उपयोगी है बल्कि जैव विविधता के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है-

कीट-पतंगों और परागणकर्ताओं का निवास: शीशम के फूलों में मधुमक्खियाँ, तितलियाँ और अन्य परागण करने वाले कीट बड़ी संख्या में आते हैं। यह परागण गतिविधि स्थानीय फसलों की उत्पादकता बढ़ाने में भी सहायक होती है।

पक्षियों का आश्रय स्थल: इसकी घनी छाया और मजबूत शाखाएँ विभिन्न पक्षियों को घोंसले बनाने के लिए सुरक्षित स्थान प्रदान करती हैं। तोते, मैना, बुलबुल और कबूतर जैसे पक्षी शीशम वृक्ष में सामान्यतः पाए जाते हैं।

सूक्ष्म जीवों के लिए पारिस्थितिकी तंत्र: शीशम के आसपास की मिट्टी में सूक्ष्म जीवों की विविधता अधिक होती है, जो भूमि की उर्वरता को बढ़ाते हैं।

स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन: शीशम का पेड़ जलवायु को संतुलित रखता है, कार्बन डाइऑक्साइड सोखकर हवा को साफ करता है और पर्यावरण की स्थिरता में मदद करता है।

वन्यजीव संरक्षण में भूमिका: ग्रामीण और कस्बाई इलाकों में यह पेड़ गिलहरी, छिपकली और कीट खाने वाले पक्षियों के लिए भोजन और घर देता है।

पर्यावरणीय और सामाजिक दृष्टिकोण से महत्व

- ग्रामीण क्षेत्रों में शीशम की लकड़ी रोजगार का एक बड़ा स्रोत है।
- यह वृक्ष जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में प्राकृतिक कवच की तरह कार्य करता है।
- इसकी उपस्थिति से जैव विविधता का संरक्षण होता है, जो पृथ्वी के पारिस्थितिक संतुलन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

महाविद्यालय परिसर में लगे शीशम वृक्ष यह प्रमाणित करते हैं कि जब वैज्ञानिक सोच और पर्यावरणीय संवेदना साथ चलती है, तो सतत् विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।

शीशम केवल एक वृक्ष नहीं, बल्कि कृषि, पर्यावरण और जैव विविधता का त्रिवेणी संगम है। इसके संरक्षण और संवर्धन से न केवल हमारे महाविद्यालय का वातावरण हरित बनता है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी और संतुलित भविष्य की नींव भी रखी जाती है।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

पपीते की खेती

● डॉ. निशिथ गुप्ता
कृषि विज्ञान केन्द्र, देवास

भूमि :

पपीते की सफल बागवानी के लिये गहरी और उपजाऊ, सामान्य पी-एच मान वाली बलुई दोमट मृदा जिसमें जल निकास की उचित व्यवस्था हो, उपयुक्त होती है। पपीते के पौधे जल भराव के लिए संवेदनशील होते हैं अतः वह क्षेत्र जहां पानी रुकने की संभावना होती है, इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं होता हैं।

प्रवर्धन :

पपीता का प्रवर्धन मुख्य रूप से बीज के द्वारा ही किया जाता है। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में पपीता लगाने के लिए लगभग 2500 सें 3000 पौधों की आवश्यकता होती है, जोकि गायनोडायोसियस किस्मों मे लगभग 80-100 ग्राम बीजों सें प्राप्त हो जाते हैं जबकि परंपरागत किस्मों के लिए 400-500 ग्राम बीजों की आवश्यकता होती है।

उन्नत प्रजातियां :

पूसा नन्हा, पूसा ड्वार्फ, पूसा डेलिसियस, पूसा मैजेस्टी, पूसा जायंट, सूर्या, कुर्ग हनीड्यू, को. 1, को. 2, को. 3, को. 4

पौधे तैयार करने की विधि :

पपीते का स्वस्थ पौध तैयार करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। बीज बोने के लिए 6X8'' इंच आकार के पॉलीथिन की थैलियों का प्रयोग किया जाता हैं। बोने से पहले किसी भी रसायनिक फफूंदीनाशक से बीजों का उपचार करें तथा बीजों को 1.0 सेमी की गहराई पर थैलियों में बीचों-बीच बोयें। बीज बोने के बाद उनकी समय-समय पर सिंचाई करते रहें। साधारणतः पपीते का बीज नर्सरी में रोपने की निर्धारित तिथि से दो महीने पहले बोयें। इस प्रकार पौधे मुख्य क्षेत्र में रोपाई के समय करीब 20 से 25 सेमी ऊंचाई के हो जाते हैं।

पपीता उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगाई जाने वाले प्रमुख फलों में से एक है। यह विटामिन 'ए' व कई औषधीय गुणों से भरपूर होता है। इसके औषधीय गुणों एवं आर्थिक रूप से लाभकारी होने के कारण पिछले कुछ वर्षों से किसान भाइयों ने इसकी खेती की ओर अधिक ध्यान देना शुरु किया है, जिसके कारण क्षेत्रफल की दृष्टि से देखें तो आज यह हमारे देश के पांच प्रमुख फलों में से एक है। इसके फलों का दूध विभिन्न प्रकार के रोग एवं व्याधियों के उपचार के लिए उपयोग में लाया जाता है।

खेत की तैयारी एवं पौध रोपण :

पपीते के पौधे लगाने से पहले खेत की अच्छी तरह से जुताई करके उसे समतल कर लें ताकि सिंचाई के समय या वर्षा ऋतु में जलभराव न हो। पपीता के पौधे मुख्य खेत में लगाने के लिए 2X2 मीटर की दूरी पर 50X50X50 सेमी (लंबाईX चौड़ाईX गहराई) आकार के गड्ढे खोद ले परन्तु बौनी किस्मों जैसे पूसा नन्हा के लिए यह दूरी 1.5X1.5 मीटर रखे। पौधों की रोपाई करते समय यह ध्यान रखें कि डायोसियस किस्म के 2-3 पौधे तथा गायनोडायोसियस किस्म में एक पौधा प्रति गड्ढे में लगायें। रोपण के बाद प्रत्येक पौधे की हल्की सिंचाई करें।

खाद एवं उर्वरक :

पपीते के एक फल देने वाले पौधे को 200-250 ग्राम नाइट्रोजन, 200-250 ग्राम फास्फोरस तथा 250 से 500 ग्राम पोटाश देने से अच्छी उपज प्राप्त होती है। उपरोक्त पोषक तत्वों के लिए 450 से 550 ग्राम यूरिया, 1200 से 1500 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 450-850 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश लेकर उन्हें आपस में मिला लें। इसके बाद चार बराबर भागों में बांटकर प्रत्येक माह के शुरू में जुलाई से अक्टूबर तक पौधे की छांव के नीचे पौधे से 30 सेमी की गोलाई में देकर मृदा में अच्छी तरह मिला दें। खाद देने के बाद हल्की सिंचाई कर दें। इसके अतिरिक्त सूक्ष्म तत्व बोरॉन (1 ग्राम प्रति लीटर पानी में) तथा जिंक सल्फेट (5 ग्राम प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव पौध रोपण के चौथे एवं आठवें महीने में करें।

सिंचाई :

पपीता उथली जड़ वाला पौधा होने के कारण सही समय पर पानी देना जरूरी होता है। जब तक पौधा फलन में नहीं आता तब तक हल्की सिंचाई करें, जिससे पौधे जीवित रह सकें। अधिक पानी देने से पौधे काफी लम्बे हो जाते हैं तथा विषाणु रोग का प्रकोप भी अधिक होने की संभावना होती है। फल लगने से लेकर पकने तक पौधों को अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है। पानी की कमी के कारण फल झड़ने लगते हैं। गर्मी के दिनों में एक सप्ताह के अंतराल पर तथा जाड़े के दिनों में 12-15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें। मृदा नमी को संरक्षित करने के लिए पौधे के तने के चारों तरपफ सूखे खरपतवार या काली पॉलीथिन की पलवार बिछायें।

फलों की तुड़ाई :

पपीता का पौधों में रोपण के लगभग 9-10 महीनों के अन्दर फल लगने प्रारम्भ हो जाते है। फल लगने के 120-130 दिन के बाद वो पकने लगते हैं उस समय इन्हे तोड़ लें। फलों का रंग गहरा हरे रंग से बदलकर हल्का पीला होने लगता है यह रंग फल के शीर्ष भाग सें बदलना प्रारम्भ होता है। जब पीलापन शुरू हो जाये तब डंठल सहित फल की तुड़ाई कर लें।

फसलों में राइज़ोबियम की उपयोगिता

● गिरिराज चौधरी
राजमाता विजियाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर
● हंसा चौधरी
बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी, वाराणसी

भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसमें लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। भारत दलहनी फसलों का एक प्रमुख उत्पादक देश है, विश्व में दलहन उत्पादन में भारत का प्रथम स्थान है। जिसमें विभिन्न प्रकार के दलहनी फसलों की खेती की जाती है जैसे चना, मूँग, मटर, उड़द, अरहर, लोबिया, मूँगफली, सोयाबीन इत्यादि, जो शाकाहारी भोजन में प्रोटीन का मुख्य स्त्रोत है, दलहनी फसलों में जैव उवर्रकों के प्रयोग करने से वायुमंडल में उपस्थित नत्रजन पौधों को नाइट्रेट के रूप में सुगमता से उपलब्ध होती है तथा मृदा में पहले से मौजूद अघुलनशील पोषक तत्व जैसे फास्फोरस आदि घुलनशील होकर पौधों को आसानी से उपलब्ध होते हैं। चूंकि जीवाणु प्राकृतिक है, इसलिए इनके प्रयोग से भूमि की उवर्राशक्ति बढ़ती है और पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव भी नहीं पड़ता। जैव उर्वरक रसायनिक उर्वरकों के पूरक भी है, रसायनिक उर्वरक के पूरक के रूप में जैव उर्वरक के प्रयोग से हम बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

जैव उर्वरक

जैव उर्वरक एक जीवित उर्वरक है जो सूक्ष्मजीव जैसे जीवाणु, कवक आदि किसी नमी धारक पदार्थ के साथ मिश्रित होते हैं जो भूमि में डालने पर उसकी उपज बढ़ाने के साथ साथ उर्वराशक्ति में भी वृद्धि का कार्य करते हैं। सूक्ष्मजीवों की निर्धारित मात्रा को किसी नमी धारक धूलीय पदार्थ के साथ तैयार किये जाते हैं यह प्रायः 'कल्चर' के नाम से बाजार में उपलब्ध है।

राइजोबियम क्या है ?

दलहनी (फलीदार) पौधों की जड़ों में ग्रंथियां पाई जाती हैं उनमें राइजोबियम नामक जीवाणु पाया जाता है जो वायुमंडलीय नत्रजन का स्थिरीकरण कर फसल की पैदावर बढ़ाने के साथ-साथ उसकी उर्वरा शक्ति भी बढ़ाने में सहायक है। जो दलहनी फसलों में प्रयोग किया जाता है।

बीज उपचारित करने की विधि

- बोने से पूर्व बीज को साफ पानी से धोकर सुखा लें।
- बीज उपचारित करने से पहले 100 ग्राम गुड़ आधा लीटर पानी में डालकर पन्द्रह मिनट तक उबालें। यदि गुड़ न हो तो गोंद का भी प्रयोग किया जा सकता है।
- घोल को अच्छी तरह ठंडा होने पर इस घोल में एक पैकेट राइजोबियम जीवाणु कल्चर का घोल डालें, और अच्छी तरह कल्चर को घोल में मिलायें।
- आधा एकड़ के लिए पर्याप्त बीज को कल्चर के घोल में डालकर साफ हाथों से अच्छी तरह मिला दें।

राइजोबियम कल्चर के लाभ

राइजोबियम जीवाणु वातावरण मे व्याप्त नत्रजन का स्थिरीकरण कर पौधों की जड़ों तक घुलनशील अवस्था में पहुंचाते हैं। अतः दलहनी फसलों में रसायनिक खाद की कम आवश्यकता होती है। राइजोबियम के प्रयोग से दलहन की उपज में कई प्रतिशत तक की बढ़ोतरी होती है (अपवाद=राजमा)। राइजोबियम के प्रयोग से भूमि में नत्रजन की मात्रा बढ़ जाती है तथा उर्वरा बनी रहती है। दलहनों की जड़ों में विद्यमान जीवाणुओं द्वारा संचित नत्रजन अगली फसल द्वारा ग्रहण किया जाता है। राइजोबियम द्वारा यौगिकीक्रत नत्रजन कार्बनिक रूप में होने के कारण पूर्ण रूप से पौधों को प्राप्त होता है

सावधानियाँ

- प्रत्येक दलहन विशेष को उसके विशेष कल्चर से ही उपचारित करें।
- कल्चर के पैकेट पर लिखी अंतिम तिथि से पहले प्रयोग करें।
- बीज उपचारित करने की सारी तैयारियाँ करने के बाद कल्चर का पैकेट खोलें।
- बीजों को उपचारित करके कुछ समय के लिए छायादार जगह पर सुखाएँ, फिर सुखाने के तुरंत बाद बुवाई करें।
- यदि बीजों को कल्चर के साथ-साथ कीटनाशक व फफूंदनाशक रसायनों से उपचारित करना हो तो क्रमशः फफूंदनाशक, कीटनाशक और अंततः राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।
- गुड़ और पानी का घोल ठंडा होने के उपरांत उसमें धीरे-धीरे कल्चर को डालें।
- बीज उपचार करते समय हाथों के दस्ताने व मुँह पर मास्क अवश्य पहनें।

ब्रूसीलोसिस रोकथाम के उपाय

● शशि प्रधान ● कविता रॉय
● ब्रजेश सिंह ● धवल कुमावत
डिपार्टमेन्ट ऑफ वेटेरनरी मेडीसिन
कॉलेज ऑफ वेटेरनरी साईंस एंड ए.एच.
जबलपुर, shee1811@gmail.com

'ब्रूसीलोसिस एक अत्यंत संक्रामक रोग है, जो ब्रूसेला जाति के जीवाणु द्वारा उत्पन्न होता है।'

- इसे 'लहरदार बुखार', 'भू-मध्यसागरीय ज्वर', 'माल्टा ज्वर' के नाम से भी जाना जाता है।
- ब्रूसीलोसिस मुख्यतः मवेशियों शूकर, बकरी, भेड़ और कुत्तों को होने वाला पशुजन्य रोग है।
- संक्रमण मनुष्य में संक्रमित सामग्री जैसे कि जन्म के समय निकलने वाले पदार्थ के साथ पशुओं के प्रत्यक्ष संपर्क या पशु उत्पाद सेवन से अप्रत्यक्ष रूप या हवा में उपस्थित वातानीत एजेंटों को सांस के भीतर लेने से फैलता है।
- मनुष्य में संक्रमण का प्रमुख स्त्रोत कच्चे दूध का सेवन एवं कच्चे दूध से निर्मित पदार्थ हैं।

कारणः

- ब्रूसीलोसिस बैक्टीरिया ब्रूसेला की प्रजातियों जैसे कि ब्रूसेला अबोर्टस, मेलिटेंसिस, सुईस, केनिस के कारण होता है।
- ये संक्रमित जानवरों के मूत्र, दूध एवं गर्भनालीय तरल पदार्थों में अधिक संख्या में निकलते हैं।
- ब्रूसेला प्रजाति धूल, गोबर, पानी, गाढ़े घोल, गर्भपात भ्रूण, मिट्टी, मांस और डेयरी उत्पादों में लंबी अवधि तक जीवित रह सकते हैं।
- उष्मायन अवधि अधिक परिवर्तनशील होती हैं। आमतौर पर उष्मायन अवधि दो से चार सप्ताह होती है। लेकिन एक सप्ताह से दो महीने या उससे अधिक समय तक हो सकती है।

लक्षणः शुरूआती लक्षणों में बुखार, कमजोरी, बेचैनी, आहार, सिरदर्द, भूख में कमी, मांसपेशियों और जोड़ों और पीठ में दर्द, थकान शामिल है।

कुछ संकेत और लक्षण लंबे समय तक रह सकते हैं जैसे कि- आवर्तक बुखार, गठिया, अंडकोष और अंडकोष के क्षेत्र की सूजन, कोनिक थकान, अवसाद, यकृत और तिल्ली की सूजन। जटिलताएं शरीर की किसी भी अंग प्रणाली को प्रभावित कर सकती है। रोग द्वारा मृत्यु की संख्या अधिक नहीं है, किन्तु रोग शीघ्र दूर नहीं होता है।

निदान : इसलिए निदान के लिए प्रयोगशाला परीक्षणों के सहयोग की आवश्यकता होती है।

संभावित नैदानिक परीक्षण 2 तरह का होता है। पहला रोज़ बंगाल टेस्ट (RBPT) और दूसरा स्टैंडर्ड एग्लूटीनेशन टेस्ट (SAT) स्क्रीनिंग के लिये रोज़ बंगाल टेस्ट (RBPT)

यदि संभावित नैदानिक परीक्षण सकारात्मक है, तो नैदानिक पुष्टि परीक्षण के तहत दो परीक्षणों में से एक रोग पुष्टि के लिये किया जाता है।

पुष्टि नैदानिक परीक्षण : रक्त या अन्य नैदानिक नमूने से ब्रूसेला प्रजाति को अलग किया जाता हैं।

संभावित प्रयोगशाला नैदानिक परीक्षण एग्लोटिनेटिंग एंटीबॉडी (आरबीटी, एसएटी) संख्या पता लगाने पर आधारित है। उनको गैर-एग्लोटिनेटिंग एंटीबॉडी का पता लगाने वाले परीक्षण के साथ एलिसा आईजीजी परीक्षण और कूम आजीजी के माध्यम से किया जाता है।

- इस रोग के तथा इंन्फ्लुएंजा मलेरिया, तपेदिक, मोतीझिरा आदि रोगों के लक्षण आपस में मिलने के कारण विशेष समूहन परीक्षण तथा त्वचा में टीका परीक्षण से भी रोग का निदान होता है।

पशुओं का छूनदार गर्भपात :

- जीवाणुजनित इस रोग में गोपशुओं तथा भैंसों में गर्भावस्था में अंतिम त्रैमास में गर्भपात हो जाता है। मनुष्यों में यह उतार चढ़ाव वाला बुखार (अन्ड्यूलेण्ट फीवर) नामक बीमारी पैदा करता हैं। पशुओं में गर्भपात से पहले योनी से अपारदर्शी पदार्थ निकलता है तथा गर्भपात के बाद पशु की जेर (Placenta) रूक जाती है। इसके अतिरिक्त यह जोड़ों में आथायटिस (जोड़ों की सूजन) पैदा कर सकता है।

उपचार एवं रोकथाम :

- अब तक इस रोग का कोई प्रभावकारी इलाज नहीं है।
- इसकी रोकथाम के लिए बछियों में 3-6 माह की आयु में ब्रूसेल्ला अबोर्टस स्ट्रेन-19 के टीके लगाए जा सकते हैं।
- पशुओं में प्रजनन की कृत्रिम गर्भाधान (AI) पद्धति अपनाकर भी इस रोग से बचा जा सकता है।
- रोग प्रतिषेध के लिए पाश्चुरीकृत दूध को काम में लाना चाहिए।
- चिकित्सा में उचित परामर्श तथा सल्फोनामाइड, स्ट्रोटोमाइसिन आदि का प्रयोग होता है।

● डॉ. अनुप्रिया कुलचानिया, राजस्थान कृषि अनुसन्धान संस्थान दुर्गापुरा, जयपुर
● डॉ. प्रह्लाद पूनिया, यंग प्रोफेशनल-2, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, सिरसा, हरियाणा
● महेंद्र कुमार घासोलिया, श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर

बकरियों के रोग व उपचार

बकरी जिसे गरीबों की गाय भी कहा जाता है किसानों के लिए आय बढ़ाने का अच्छा जरिया है। सामान्यतः बकरी पालन में बहुत कम खर्च आता है परन्तु यदि बकरियों को रोग लग जाए तो वह आपके लिए मुसीबत का कारण हो सकता है। इसलिए आज आपके लिए बकरियों को सामान्यतः लगने वाले रोग एवं उसका उपचार किस तरह कर सकते हैं बता रहे हैं।

हाजमे तथा भूख लगने की दवाएंः

बकरी को भूख न लगने पर, कब्ज, कमजोरी इत्यादि की शिकायत होने पर उसे HB Strong नामक दवा एक दिन में 2.5 ग्राम दो बार लगातार तीन चार दिन तक दी जा सकती है. इसके अलावा इन्ही सब समस्याओं के लिए Rumbion Bolus नामक आयुर्वेदिक दवा का उपयोग HB Strong Powder के साथ किया जा सकता है। इन दवाओं का उपयोग सामान्य हेल्थ टॉनिक के रूप में भी किया जा सकता है और बकरियों को यह दवा गुड़ के साथ भी दी जा सकती है।

लीवर टॉनिकः

अक्सर बकरियों का लीवर वर्षा ऋतु में खराब हो सकता है, इसलिए इस बकरियों को लीवर सम्बंधी कोई भी बीमारी होने पर उन्हें LIV 52 Protec (जिसे हिमालय ड्रग द्वारा निर्मित किया गया है) की 15-20 मिली दिन में दो बार लगातार 8-10 दिनों तक देना होगा। उपर्युक्त दवा के अलावा स्पअवस जो की एक इंडियन हर्ब है की 8-12 ग्राम मात्रा भोजन या गुड़ के साथ मिलाकर दिन में एक से दो बार 8-10 दिनों तक खिलायें।

अतिसार डायरिया का आयुर्वेदिक ईलाजः

यदि बकरी को डायरिया या अतिसार की समस्या हो तो बकरी की बीमारियों का आयुर्वेदिक ईलाज करने के लिए उसे Diovet (जिसका निर्माण Charak Phermaceuticals किया गया है) 25 मिली दवा दिन में दो बार दी जा सकती है। इसके अलावा इसी समस्या के लिए Neblon जो की एक इंडियन हर्ब है का उपयोग 6-10 ग्राम दिन में 2-3 बार छह घंटे के अन्तराल में किया जा सकता है यह आयुर्वेदिक दवा चावल के मांड या गुड़ के साथ दी जा सकती है।

अपच या पेट की सूजन में प्रयोग में लायी जाने वाली दवाः

यदि बकरी पेट में सूजन या अपच जैसी बीमारी से ग्रस्त हो तो बकरी की बीमारियों का आयुर्वेदिक ईलाज करने के लिए उसे टिम्पोल (जो की एक इंडियन हर्ब है) की पेट में गैस जमा होने के कारन होने वाली सूजन से निजात देने के लिए 20-25 ग्राम दवा 250 मिली गुनगुने पानी में दिन में दो बार दी जा सकती है। यदि पशु को अधिक तकलीफ है तो हर 4 घंटे के अंतराल में यह दवा दी जा सकती है। यदि बकरी का पेट फूल गया हो तो 250-500 मिली पानी या फिर बादाम के तेल के साथ यही दवा दिन में दो बार दी जा सकती है।

सर्दी जुकाम के लिए आयुर्वेदिक दवाः

बकरी के सर्दी जुकाम एवं ब्रांकाइटीस जैसी बीमारियों से जूझने पर इन बकरी की बीमारियों का आयुर्वेदिक ईलाज करने के लिए Caflon (जो की एक इंडियन हर्ब है) दिन में दो तीन बार 6-12 ग्राम की मात्रा में गुड़ या गरम पानी के साथ मिलाकर दी जा सकती है।

दूध बढ़ाने के लिए आयुर्वेदिक दवाः

बकरी के प्रसवोपरांत बकरी को अनेक समस्याएं जैसे दूध कम आना, चयापचयी असुविधा, थकान, थन से ठीक तरह से दूध नहीं आना, इत्यादि हो सकती हैं इन समस्याओं अर्थात इन बकरी की बीमारियों का आयुर्वेदिक ईलाज करने के लिए Galog (एक इंडियन हर्ब) प्रतिदिन 10-15 ग्राम एक बार गुड़ के साथ मिलाकर बीस दिनों तक दी जा सकती है। इसके अलावा Payapro Bolus (डाबर द्वारा निर्मित) एक दिन में एक बार 1-2 bolus दस से पन्द्रह दिनों तक दी जा सकती है।

घाव दाद चर्मरोग की आयुर्वेदिक दवाः

बकरी की त्वचा पर समय समय पर घाव, दाद एवं अन्य चर्मरोग होते रहते हैं इन बकरी की बीमारियों का आयुर्वेदिक ईलाज करने के लिए Hima Ointment (एक इंडियन हर्ब है) का प्रयोग किया जा सकता है, लेकिन इसे त्वचा या घाव पर लगाने से पहले नीम की पत्तियों को पानी में उबालकर त्वचा या घाव को साफ करना बेहद जरुरी होता है। इसके अलावा Topicure Spray का भी उपयोग इन समस्याओं में किया जा सकता है।

जूं का आयुर्वेदिक ईलाजः

बकरी एक पशु है इसलिए अक्सर इनके शरीर में जूं, कीड़े एवं अन्य कीट अपना घर कर लेते हैं इनका आयुर्वेदिक ईलाज करने के लिए Pestoban (इंडियन हर्ब) या Peste का उपयोग पानी के साथ 1:10 के अनुपात में किया जा सकता है।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

खिमला, नीमच में निर्माणाधीन

ग्रीनको पम्प स्टोरेज परियोजना क्षेत्र के लिए वरदान

ग्राम-खिमला, जिला-नीमच में ग्रीनको ग्रुप की 1920 मेगावाट पम्प स्टोरेज परियोजना नीमच, मंदसौर और आसपास के क्षेत्र के लिए वरदान साबित होगी। परियोजना की अनुमानित लागत 11 हजार 470 करोड़ रुपए है। परियोजना पर इन दिनों तेज गति से काम चल रहा है। इस परियोजना की आधारशिला तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा 4 अक्टूबर 2023 को वर्चुअल कार्यक्रम में रखी गई थी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी इस प्रोजेक्ट को मध्यप्रदेश के लिए विशेष उपलब्धि बताया है। यह अपनी तरह की देश की सबसे बड़ी परियोजना है।

● जगदीश मालवीय, सहायक संचालक, जनसंपर्क, नीमच (म.प्र.)

बिजली उत्पादन के साथ रोजगार भी

इस परियोजना से न केवल क्षेत्र की बिजली की आवश्यकता पूरी होगी, बल्कि बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार भी मिलेगा। गांधीसागर पम्प स्टोरेज परियोजना (PSP) की 1920 मेगावाट/10326 मेगावाट प्रति घंटे की स्टोरेज क्षमता है। परियोजना की अनुमानित लागत 11 हजार 470 करोड़ रुपए है। इस परियोजना में दो जलाशय शामिल हैं, गांधीसागर निचला जलाशय (पहले से मौजूद) और ऊपरी जलाशय (ग्रीनको ग्रुप द्वारा नया निर्माण किया जा रहा है)। इस योजना में गांधी सागर जलाशय के 1.24 टीएमसी पानी का पुनः परिसंचरण द्वारा पुनः उपयोग की परिकल्पना की गई है। गांधी सागर जलाशय

मुख्यमंत्री ने अक्टूबर 2023 में किया था शिलान्यास

(मौजूदा निचला जलाशय) में पानी को पम्प करके प्रस्तावित पम्प स्टोरेज परियोजना के ऊपरी जलाशय में संग्रहित किया जाएगा और इसका उपयोग बिजली उत्पादन के लिए किया जाएगा। गांधी सागर जलाशय की कुल संग्रहण क्षमता 270.321 टीएमसी है। प्रस्तावित पम्प स्टोरेज परियोजना के ऊपरी जलाशय के घटक का भौगोलिक निर्देशांक अक्षांश 24° 31' 6.89" उत्तर तथा देशांतर 75° 30' 56.12" पूर्व में है तथा गांधी सागर निचले जलाशय (मौजूदा) का भौगोलिक निर्देशांक 24° 31' 5.40" उत्तर तथा 75° 32' 5.28" पूर्व में है। प्रस्तावित पीएसपी की रेटिंग 1920 मेगावाट है। परियोजना की चक्र दक्षता 79.44% के आसपास होने की उम्मीद है, जबकि मशीन की उपलब्धता 95% होगी। 80 किलोमीटर लम्बी एसीएसआर क्वाड बरसिमिस कंडक्टर के साथ एक 420 केवी डबल सर्किट ट्रांसमिशन लाइन का उपयोग करने का प्रस्ताव है। यह लाइन उत्पादित बिजली की निकासी तथा पम्पिंग मोड के दौरान बिजली की आपूर्ति के लिए मध्य प्रदेश राज्य के नीमच में 400/220 केवी पीजीसीआईएल सब स्टेशन से जुड़ी होगी।

सम्पूर्ण कार्य दिसम्बर 2026 तक पूर्ण

सड़क, रोजगार सुविधाएं, मलबा निपटान क्षेत्र आदि जैसे बुनियादी ढांचा मद के लिए आवश्यक भूमि सहित विभिन्न घटकों के निर्माण के लिए आवश्यक

मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने 22 नवम्बर को हैदराबाद प्रवास के दौरान ग्रीनको एनर्जी प्राईवेट लिमिटेड के मुख्यालय कार्यालय में संस्था की कार्य पद्धति के बारे में जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने नीमच जिले में निर्माणाधीन ग्रीनको पम्प स्टोरेज परियोजना के मॉडल का अवलोकन भी किया।

कुल भूमि का अनुमान लगभग 402.50 हेक्टेयर है, जिसमें वन भूमि क्षेत्र 402.50 हेक्टेयर और गैर-वन भूमि क्षेत्र 100.54 हेक्टेयर है, जिसे निर्माण के दौरान अस्थायी उपयोग के लिए अधिग्रहित करने का प्रस्ताव है। बुनियादी ढांचे के विकास सहित 3.5 वर्ष की अवधि के भीतर परियोजना का निर्माण करने का प्रस्ताव है। इस परियोजना का सम्पूर्ण कार्य दिसम्बर 2026 तक पूर्ण कर लिया जावेगा। प्रस्तावित योजना में 1.90 टीएमसी सकल भंडारण क्षमता वाले ऊपरी जलाशय के निर्माण के लिए अधिकतम 35 मीटर ऊंचाई के डामर फेस रॉकफिल बांध/तटबंध का निर्माण शामिल होगा।

नौ वर्टिकल-एक्सिस रिवर्सिबल फ्रांसिस इकाइयां

ऊपरी जलाशय में स्थित ट्रैश रैक और गेटों के साथ प्रदान की गई इंटेक संरचना से आठ स्वतंत्र पेनस्टॉक/प्रेशर शाफ्ट टेकऑफ किए जाएंगे। सतही विद्युत गृह, सेवन संरचना के नीचे की ओर स्थित होगा तथा इसमें कुल नौ वर्टिकल-एक्सिस रिवर्सिबल फ्रांसिस प्रकार की इकाइयां होंगी, जिनमें से प्रत्येक में जनरेटर/मोटर तथा एक पंप/टरबाइन होगा, जिसकी उत्पादन/पंपिंग क्षमता क्रमशः 240 मेगावाट/249 मेगावाट की सात इकाइयां तथा 120 मेगावाट/134 मेगावाट की दो वर्टिकल-एक्सिस रिवर्सिबल फ्रांसिस प्रकार की इकाइयां होंगी।

मौजूदा गांधी सागर जलाशय का डिजाइन बाढ़ निर्वहन 2138 क्यूमेक्स है। गांधी सागर जलाशय की सकल भंडारण क्षमता 270.321 टीएमसी है। पीएसपी का परिचालन पैटर्न इस तरह रखा गया है कि प्रस्तावित पीएसपी के लिए 1.24 टीएमसी पानी का उपयोग किया जाएगा तथा प्रस्तावित ऊपरी जलाशय में लगभग 2.39 टीएमसी (या 67.66 मिलियन क्यूमेक्स) का एकमुश्त भराव गांधी सागर जलाशय से लिया जाएगा।

यह परियोजना एक पम्प स्टोरेज योजना है, इसलिए इसके संचालन के लिए वाष्पीकरण से होने वाली छोटी मात्रा की हानि को छोड़कर पानी के किसी भी प्रकार के उपभोग की आवश्यकता नहीं है। पम्प स्टोरेज परियोजना 10326 मेगावाट प्रति घंटे की ऊर्जा भंडारण क्षमता के साथ प्रस्तावित है, जिसकी पावर रेटिंग 1920 मेगावाट है। इस परियोजना में

1920 मेगावाट की पम्प स्टोरेज परियोजना पर चल रहा है तेज गति से काम

240 मेगावाट की 7 इकाइयाँ और 120 मेगावाट की 2 द्वि-दिशात्मक टर्बाइन इकाइयाँ शामिल हैं।

लगभग 12 हजार करोड़ की लागत

नीमच जिले की रामपुरा तहसील क्षेत्र के पठार अरावली (पहाड़ियों) के बीच बन रहे खिमला बिजली प्लांट से बड़ी संख्या में रोज़गार के अवसर आस पास के लोगों को मिल रहे है। प्रतिदिन 3000 से अधिक लोगों को रोजगार मिल रहा है। प्रशासन व जनता के बीच तालमेल बिठा कर ग्रीनको कम्पनी द्वारा पारदर्शिता के साथ देश के महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाया जा रहा है। लगभग 12 हजार करोड़ की लागत के इस प्रगतिशील प्रोजेक्ट से मध्यप्रदेश को नई ऊर्जा मिलेगी। परियोजना के लिए वन विभाग व राजस्व विभाग की भूमि ली गई है। यहां तालाब नुमा टैंक बना कर पंप के द्वारा गांधी सागर जलाशय से पानी लिया जाएगा ओर उसी पानी को फिर गांधी सागर में छोड़ा जाएगा। इसी से पंप स्टोरेज के माध्यम से बिजली का उत्पादन होगा। इससे मनासा जनपद के रामपुरा क्षेत्र के ग्रामीणों को विशेष लाभ मिलेगा।

देश की अपने तरह की सबसे बड़ी इस पंप स्टोरेज परियोजना का काम तेजी से चल रहा है, जो 1920 मेगावाट बिजली का उत्पादन कर भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करती नजर आ रही है।

कृषक जगत सर्वे

मक्का के गिरते दामों से हाहाकार, किसान हुए लाचार

इंदौर (कृषक जगत)। खरीफ 2025 में मध्य प्रदेश में लगभग 26 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में मक्का की बोवनी की गई, जो निर्धारित लक्ष्य 23.20 लाख हेक्टेयर से काफी अधिक है। इस वर्ष उत्पादन भी बेहतर रहा, लेकिन सरकार द्वारा समर्थन मूल्य पर खरीदी न होने से किसानों को उनकी फसल का वाजिब दाम नहीं मिल पा रहा है। वर्तमान में मंडियों में मक्का की खरीदी समर्थन मूल्य 2400 रुपये प्रति क्विंटल के मुकाबले आधे से भी कम दाम पर हो रही है, जिससे किसान भारी आर्थिक संकट में हैं। सरकार की इस नीति से किसानों में जबरदस्त आक्रोश है। किसान मक्का को भी सोयाबीन की तरह भावांतर भुगतान योजना में शामिल करने की मांग कर रहे हैं, ताकि उन्हें लागत का कुछ तो मुआवजा मिल सके। प्रदेश सरकार के कृषि मंत्री यह कह रहे हैं कि इस विषय पर विचार चल रहा है और जल्द निर्णय लिया जाएगा, लेकिन निर्णय में हो रही देरी किसानों की समझ से परे है। कृषक जगत द्वारा किसानों से किए गए सर्वे में यह स्थिति सामने आई कि समर्थन मूल्य पर खरीदी नहीं होने और बाजार में आधे दाम मिलने से किसान कर्ज में डूबते जा रहे हैं। वहीं, केंद्र सरकार और केंद्रीय कृषि मंत्री की चुप्पी को लेकर भी किसानों में नाराजगी है। इन्हीं मांगों को लेकर कई जिलों में किसानों और किसान संगठनों ने चक्काजाम व आंदोलन का एलान किया है।

करोंदिया (महेश्वर) जिला खरगोन के श्री श्याम पाटीदार ने कृषक जगत को बताया कि क्षेत्र में सूखी मक्का का समर्थन मूल्य 2400 रु. / क्विंटल के विरुद्ध 1400 से 1500 रु /क्विंटल बिक रही है। इससे किसानों की लागत भी नहीं निकल पा रही है। **खेड़ी (कसरावद) के श्री प्रेमचंद पाटीदार** कहा कि मंडी में मक्का समर्थन मूल्य से बहुत नीचे बिक रही है, जिससे किसानों का खर्च भी नहीं निकल पा रहा है। सरकार को मंडी की खरीदी व्यवस्था की निगरानी करनी चाहिए। गांव के एक किसान ने 15 दिनों तक मक्का सुखाई और फिर बेचने गया तो उसे मात्र 1300 रु./ क्विंटल का दाम मिला। **नरसिंहपुर के श्री रवींद्र चौधरी** ने बताया कि इस खरीफ में 30 एकड़ में दो अलग- अलग प्लाटों में मक्का लगाई थी, जिसमें करीब 19 और 20 क्विंटल / एकड़ का उत्पादन मिला। 15 दिन पूर्व मक्का फसल को 1500 - 1700 रु./ क्विंटल की दर से बेच दिया। मंडियों में मक्का समर्थन मूल्य से काफी नीचे 1000 से 1200 रु./ क्विंटल तक बिक रही है, इससे किसानों की लागत ही नहीं निकल पा रही है। **काटकूट (बड़वाह) के श्री भागीरथ शर्मा** ने कहा कि सरकार को मक्का की खरीदी समर्थन मूल्य पर करना चाहिए या इसे भावान्तर योजना में शामिल करना चाहिए। इस वर्ष 5 एकड़ में उत्पादित 70 क्विंटल मक्का को मंडी रेट में स्थानीय व्यापारी को 1300 रु. /क्विंटल की दर से बेच दिया। गांव के अन्य किसान **श्री शंकरलाल जाट, श्री हरिराम जाट** ने कहा कि इस वर्ष मक्का का अच्छा उत्पादन होने के बाद भी उचित दाम नहीं मिलने से किसानों की हालत खराब है। **मुंडला के किसान श्री भागीरथ दांगी, निगरनी (मनावर) जिला धार के श्री नारायण परिहार** ने मक्का को मंडी में 1300 से 1500 रु / क्विंटल के भाव से बेचा। **बोरली (मनावर) के श्री बद्रीलाल वास्केल, बड़गांव (मनावर) के श्री राजेंद्र वास्केल** ने कहा कि मक्का को व्यापारी को 1400 रु /क्विंटल की दर से बेच दिया। **ठीकरी जिला बड़वानी के किसान श्री मयूर सिंह मंडलोई** ने करीब 6 एकड़ में मक्का लगाई थी। समर्थन मूल्य पर मक्का की खरीदी के इंतज़ार में अभी मक्का नहीं बेची है।

दाम में गिरावट का कारण

उल्लेखनीय है कि खरीफ 2025 में देश में मक्का की बुवाई 94.62 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गई, और जिससे मक्का की भारी आवक ने दामों को नीचे गिरा दिया। मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और तेलंगाना में भाव 18 से 21 प्रतिशत तक गिर गए। विशेषज्ञों के अनुसार आगामी दिनों में समर्थन मूल्य पर मक्का की खरीदी, इथेनॉल संयंत्रों द्वारा खरीदी और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों पर मक्का के दाम निर्भर रहेंगे। यहां उल्लेखनीय है कि केंद्रीय परिवहन मंत्री श्री नितिन गड़करी ने कहा था कि मक्का से इथेनॉल बनेगा और मक्का उत्पादक किसान ऊर्जादाता बनेंगे। लेकिन वर्तमान में तो मक्का उत्पादक किसानों को अपनी पूरी ऊर्जा मक्का फसल का उचित दाम मिलने में खर्च करना पड़ रही है।

मक्का की प्रदेशव्यापी दुर्दशा

इसी तरह दूरस्थ पांढुर्ना जिले में भी मक्का की खरीदी में भावों का उतार -चढ़ाव देखा गया। **ढोलनखापा (पांढुर्ना) के श्री विनोद धुर्वे** की मक्का गत दिनों मंडी में 1343 रु / क्विंटल के भाव बिकी , जबकि इसी गांव के **श्री उदय धुर्वे की** मक्का 1701 रु / क्विंटल की दर से बिकी। **चिचखेड़ा (पांढुर्ना) के श्री नंदू** की 20 क्विंटल मक्का 1651 रु / क्विंटल के भाव से बिकी। **कोटलाबहादुर (मंदसौर) के श्री सुशील पाटीदार** ने ढाई एकड़ में लाल मक्का लगाई है , लेकिन फिलहाल इसके दाम 1700 - 1800 रु / क्विंटल होने से अभी माल नहीं बेचा है। श्री पाटीदार कि क्षेत्र के किसानों का सोयाबीन से मोहभंग हो चुका है और उनका रुझान मक्का और मूंगफली की ओर बढ़ा है। इसी गांव के **श्री सुनील पाटीदार** ने तीन बीघे की मक्का को निकाल तो लिया है, लेकिन दाम कम होने और फ़िलहाल भुगतान की ज़रूरत नहीं होने से नहीं बेचा है।

यहीं के **श्री नेपालसिंह डांगी** ने 15 दिन पूर्व मक्का 1630 रु / क्विंटल के भाव से बेची है। इनका कहना था कि गत वर्ष मक्का का भाव दो हज़ार रु से अधिक मिला था, लेकिन इस बार भाव कम होने से नुकसान हुआ है।

मक्का का 5 वर्षीय समर्थन मूल्य - मक्का का समर्थन मूल्य 2020-2021 में 1850 रु , 2021-22 में 1870 रु, 2022-2023 में 1962 रु, 2023-24 में 2090 रु, 2024-2025 में 2225 रु/क्विंटल था। जबकि 2025-2026 में मक्का का समर्थन मूल्य 2400 रु/क्विंटल निर्धारित किया गया है।

मक्का का 5 वर्षीय मॉडल रेट- 2020-21 में 1600-2000 रु, 2021-22 में 1700-2100 रु, 2022-23 में 1800-2200 रु, 2023 -2024 में 1900-2300 रु, 2024-25 में 1800-2700 रु/क्विंटल था।

फोटो गैलरी

लोकार्पण

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने इंदौर कृषि महाविद्यालय में जननायक टंट्या भील बालक छात्रावास, एरोपोनिक्स यूनिट, महाविद्यालय के मुख्य द्वार, ऑडिटोरियम व कन्या छात्रावास के नवीनीकरण कार्य का लोकार्पण किया।

नए सीजेआई

जस्टिस सूर्यकांत ने भारत के 53वें चीफ जस्टिस (CJI) के रूप में शपथ ली। राष्ट्रपति भवन में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें शपथ दिलाई। आपका कार्यकाल 9 फरवरी 2027 तक होगा।

समीक्षा बैठक

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पशुपालन एवं डेयरी विभाग की समीक्षा की। बैठक में पशुपालन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लखन पटेल, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव श्री नीरज मंडलोई, प्रमुख सचिव पशुपालन श्री उमाकांत उमराव सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

एग्रीमेक में कृषक जगत

पूसा नई दिल्ली में आयोजित एग्रीमेक कृषि मेले में कृषक जगत - ग्लोबल एग्रीकल्चर के स्टॉल पर राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान संस्थान नई दिल्ली के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनूप कुमार तिवारी को वार्षिक सदस्यता एवं कृषि साहित्य देते हुए श्रवण मीना।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

एग्रोविजन कृषि मेले में मप्र की भागीदारी

भोपाल (कृषक जगत)। नागपुर में आयोजित एग्रो विजन कृषि मेले में प्रदेश के छिंदवाड़ा, सिवनी, बैतूल जिले के संयुक्त स्टाल लगाए गए। चार दिवसीय मेले में तीनों जिलों के कृषकों से उत्पादित अनाजों, उद्यानिकी फसलों को प्रदर्शन के लिए रखा गया था। उक्त फसलों के उत्पादन की तकनीक को समझा। फसलों में सिवनी जिले के जीरा शंकर चावल, छिंदवाड़ा की मिलेट्स फसलें, बैतूल के काले चावल के अलावा कृषकों को तीनों जिलों में जैविक एवं प्राकृतिक खेती से तैयार फसलों को देखने का अवसर मिला।

राष्ट्रीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती संस्थान नागपुर के निदेशक डॉ. अजय सिंह राजपूत ने स्टाल का अवलोकन कर प्रदेश में प्राचीन पद्धति पर खेती की सराहना की। मेले में छिंदवाड़ा जिले से उप संचालक कृषि श्री जितेन्द्र कुमार सिंह, उप परियोजना संचालक आत्मा श्रीमती प्राची कौतू, सहायक संचालक कृषि श्रीमती सरिता सिंह, श्री धीरज ठाकुर, श्री दीपक चौरसिया, एसएडीओ श्रीमती आकांक्षा शिवकर, बैतूल के सहायक संचालक कृषि श्री सुरेन्द्र परहाते एवं उनकी टीम, सिवनी से उप संचालक कृषि श्री एस. के. धुर्वे, सहायक संचालक कृषि श्री राजेश मेश्राम, श्री प्रफुल्ल घोडेश्वर, श्री नितिन कीर्ति गनवीर, श्री पवन कौरव, डॉ. अखिलेश कुल्हाड़े, श्री मुकेश मीणा, श्री ऋषिकेश चन्द्रपुरी उपस्थित थे।

टेक्सटाइल पार्क के लिए क्वालिटी युक्त कपास उत्पादन जरूरी : श्री प्रियंक

धार (कृषक जगत)। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (कपास) के अंतर्गत क्लस्टर स्तरीय प्रशिक्षण का कार्यक्रम के ग्राम कुमारउन्डी विकासखंड सरदारपुर में आयोजित किया। इस अवसर पर कलेक्टर श्री प्रियंक मिश्रा ने पीएम मित्र टेक्सटाइल्स पार्क की स्थापना होने से क्षेत्र के किसानों की कपास के गुणवत्ता युक्त उत्पादन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता बताई। श्री मिश्रा ने इसके लिए कपास की लंबे रेशे की किस्म एवं वैज्ञानिक सलाह अनुसार जागरूक होकर अधिक उत्पादन प्राप्त कर आय में वृद्धि करने की बात कही।

उपसंचालक कृषि श्री जी. एस. मोहनिया ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अंतर्गत जिले में आगामी खरीफ सीजन में कॉटन एसोसिएशन निजी कंपनी एवं विभाग के सहयोग से लम्बे रेशे वाले कपास के उन्नत किस्म के बीज उपलब्ध करवा कर कपास के रकबे में वृद्धि करने के कदम उठाए जाएंगे। इस अवसर पर केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान नागपुर महाराष्ट्र के पूर्व निदेशक डॉ. वाई. जी. प्रसाद, कपास वैज्ञानिक डॉ. संदीप चौहान, एसडीम सुश्री सलोनी अग्रवाल, कृषक श्री मुन्नालाल एवं कृषि विभाग के वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्री राजेश बर्मन कृषि विकास अधिकारियों में सर्वश्री आर. एस. बामनिया, पारस वेनल, नाथू लाल पिपलानी, राधेश्याम सिटोले, पंकज इस्के, खूम सिंह डाबर, भूर सिंह देवड़ा, संगीता मंडलोई, जमुना डाबर उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री डी. के. उपाध्यक्ष एवं आभार सहायक संचालक कृषि श्रीमती संगीता तोमर ने व्यक्त किया।

पराली जलाने पर लगाया जुर्माना

अशोकनगर (कृषक जगत)। अनुविभागीय अधिकारी राजस्व अनुभाग चंदेरी श्री मनीष धनगर द्वारा तहसीलदार के प्रतिवेदन के आधार पर 5 व्यक्तियों पर पराली जलाने के कारण 2500 रुपए के मान से 12500 रुपये अर्थदंड आरोपित किया गया है। उल्लेखनीय है कि तहसीलदार चन्देरी द्वारा प्राप्त प्रतिवेदन के आधार पर ग्राम महोली स्थित भूमि सर्वे क्रमांक 16/2 रकबा 0.209 हे. जितेन्द्र कुमार पुत्र रघुवीर सिंह जाति यादव, सर्वे क्रमांक 18/7 रकबा 0.209 हे. पर कृष्ण कुमार पुत्र कुलदीप सिंह जाति पुंडीर एवं सर्वे क्रमांक 17/1/1 रकबा 0.209 हे. मनजीत गौर पत्नी सहदेव सिख एवं ग्राम पिपरौद स्थित सर्वे क्रमांक 59/2 रकबा 0.209 हे. पर प्रमोद पुत्र भज्जू पाल तथा ग्राम छपरा स्थित भूमि सर्वे कमांक 372/1/2 रकबा 0.209 हे. में पराली जलाये जाने के कारण प्रत्येक व्यक्ति के मान से 2500 रुपये जुर्माने लगाया गया है।

मंदसौर में कृषि अधिकारियों का मिलन समारोह

मंदसौर (कृषक जगत)। सेवाकाल के दौरान विभागीय दायित्वों के अलावा परिवार की जिम्मेदारियों को संभालते हुए दोनों क्षेत्रों में मुकाम स्थापित करना व्यक्ति की सफलता सिद्ध करता है। उक्त विचार उप संचालक सह परियोजना संचालक आत्मा श्री रविन्द्र मोदी ने दीपावली मिलन कार्यक्रम के अवसर पर व्यक्त किए। जिला कृषि कार्यालय में कृषि अधिकारियों के हुए मिलन कार्यक्रम में जिले के सभी विकासखण्डों से कृषि अधिकारी परिवार सहित शामिल हुए। अधिकारियों ने अपना-अपना परिचय दिया। इस दौरान गीत, कविताएं, रचनाओं के अलावा अपनी अपनी भावनाओं को प्रदर्शित करने का अवसर मिला। सभी ने इस प्रकार के आयोजन साल में दो बार करने की बात कही। कार्यक्रम में श्रीमती प्रीति मोदी, सहायक संचालक कृषि श्रीमती अनीता धाकड़, श्री विनोद धाकड़, श्री सुरेश मुबेल, श्री पीएस कटारे, श्री आरएल मेंडा, श्री जितेंद्र आंजना वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारियों में श्री चेतन पाटीदार (मंदसौर), श्री जयराम अचाले (मल्हारगढ़), श्री महेश पाटीदार (सीतामऊ), श्री बंशीलाल रलोतिया (गरोठ), श्री गुलाब सिंह चौहान (भानपुर) एवं जिला मुख्यालय पर पदस्थ श्री विजय यादव, सुश्री अंगूर वाला धाकड़, श्री कुलदीप सक्सेना, एससीओ कृषि यंत्री श्री दौलत सिंह चौहान, सेवानिवृत्त कृषि अधिकारी श्री श्यामलाल परमार सहित कृषि विभाग एवं आत्मा के फील्ड अधिकारी उपस्थित थे।

समस्या– सब्जियों की उन्नत एवं संकर किस्मों के बीज शासकीय स्त्रोत कौन–कौन से हैं कृपया पते की जानकारी दें।

– जगदीश सैनी

समाधान– सब्जियों की उन्नत तथा संकर किस्मों पर विस्तार से कृषक जगत द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक में दिया गया है। आप चाहें तो कृषक जगत से सम्पर्क करके उसे मंगा सकते हैं। शासकीय स्त्रोतों के सम्पर्क हेतु निम्न जानकारी का उपयोग करें–

- *निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान पूसा नई दिल्ली–110012*
- *निदेशक, भारतीय बागवानी संस्थान, हिसारगट्टा लेक पोस्ट बंगलोर–560089 (कर्नाटक),*
- *निदेशक, भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, पोस्ट बाक्स नं. 01 जक्खिनी, वाराणसी–221003 (यूपी)*
- *उपसंचालक, उद्यानिकी, सागर*
- *युक्त संचालक उद्यानिकी, संचालनालय उद्यानिकी एवं प्रक्षेत्र वानिकी विन्ध्याचल भवन, भोपाल*

समस्या– मैंने सरसों लगाई है, अच्छे उत्पादन के लिये क्या करें, मार्गदर्शन करें।

– जालिम सिंह

समाधान– आपने सरसों के अच्छे उत्पादन के महत्वपूर्ण बिन्दुओं के बारे में मार्गदर्शन चाहा है तो आप निम्न उपाय करें।

- *अतिरिक्त पौधों को निकालना अत्यंत आवश्यक होगा क्योंकि एक इकाई क्षेत्र में निर्धारित मात्रा में पोषक तत्व उपलब्ध रहते हैं जिनका बढ़वार होकर पौधा कमजोर हो जाता है।*
- *खरपतवार प्रत्येक फसल में चुनौती बनकर खेत में रहते हैं उनको निकालना अत्यन्त आवश्यक कार्य होता है। कोई भी सिंचाई या उर्वरक देने के पहले ही खरपतवार बुआई के*

30–35 दिनों के अंदर ही हटा दिये जाना चाहिए।

- *सिंचित फसल को पहली सिंचाई बुआई के 30 दिनों बाद तथा दूसरी सिंचाई बुआई के 55–60 दिनों बाद की जाये। यदि एक ही सिंचाई का साधन हो तो पुष्प अवस्था में सिंचाई की जाये।*
- *माहो का आक्रमण प्रत्येक अवस्था में देखा गया है। 50 माहो प्रति पौध होने के तुरन्त बाद मिथाईल डेमेटान 750 मि.ली. प्रति हेक्टर की दर से दो छिड़काव 15 दिनों के अंतर से करें। मित्र कीट की सक्रियता पर नजर रखने के बाद ही यह कार्य यथा सम्भव शाम के समय करें ताकि वर्गीकरण क्रिया में सक्रिय कीटों को हानि नहीं हो पाये।*
- *पत्तों पर धब्बा रोग के बचाव हेतु मेन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव किये जाये।*

समस्या– सब्जियों में लाल मकड़ी का प्रकोप होता है, बहुत हानि होती है उपाय बतायें।

– ओमप्रकाश जैनी

समाधान– कद्दूवर्गीय फसल जैसे लोकी, कद्दू, करेला इत्यादि में लाल मकड़ी का प्रकोप प्रायः देखा गया है। विशेषकर जायद मौसम में अन्य फसलों में बैंगन में भी इसका प्रकोप अधिक होता है। यह लाल मकड़ी अपने रंग के कारण पहचानी जाती है तथा पत्तियों के निचली सतह पर जाला बनाकर रहती है तथा पत्तियों की नसों

से रस चूसकर हानि पहुंचाती है जो पोषक तत्व पौधों को उपलब्ध होना चाहिए उनका बढ़वार करके उत्पादन प्रभावित करती है। यह कीट बहुभक्षी अर्थात् फसलों में आता है और मार्च से अक्टूबर तक सक्रिय होती है। आप निम्न उपाय करके इसके प्रकोप पर लगाम लगा सकते हैं।

- *गंधक चूर्ण 20 किलो प्रति हेक्टर की दर से भुरकाव करें। भुरकाव धूप के समय नहीं किया जाये।*
- *इसके अलावा डायमिथिएट 30 ई.सी. या मिथाईल डिमेटान– 25 ई.सी. 1 मिली प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।*

समस्या- मैग्नीशियम की कमी के क्या लक्षण है?

समाधान- मैग्नीशियम की कमी में खासकर पुरानी पत्तियों का क्लोरोफिल कम हो जाता है और फलस्वरूप पौधा पीला हो जाता है। पीलापन पत्ती की शिराओं के बीच वाले भाग पर अधिकाधिक दिखाई देता है। सामान्तर शिराओं वाली पत्तियों में हरे तथा भूरे रंग की धारियां सी बन जाती हैं क्योंकि शिराएं हरी रहती हैं लेकिन बीच के भाग का रंग उड़ जाता है। यदि कमी लगातार देर तक बनी रहे तो फिर रंग लाल व भूरा हो जाता है और कई बार पत्तियां सूख भी जाती हैं।

समस्या- गंधक कमी के लक्षण बताएं?

समाधान- गंधक की कमी के लक्षण मुख्यता रेतीली जमीनों में प्रकट होते हैं। कमी के लक्षण मुख्यता नयी पत्तियों पर प्रकट होते हैं। पत्तियों का हरा रंग समाप्त होना शुरू हो जाता है। कई बार रंग धारियों में उड़ता है चौड़ी पत्ती वाले पौधों में पत्तियों का रंग पीला या सुनहरी पीला हो जाता है। पत्तियों के किनारे ऊपर या नीचे की ओर मुड़ जाते हैं। और प्याले जैसे आकार के दिखने लगते हैं।

समस्या- कौन सी फसलों को गंधक की अधिक आवश्यकता होती है?

समाधान- तिलहनी फसलों को सबसे अधिक मात्रा में गन्धक की आवश्यकता होती है। इसके साथ गंधक दलहनी फसलों को भी चाहिए। अन्य फसलों की आवश्यकता आमतौर पर मिट्टी से पूरी हो जाती हैं। लेकिन उपरोक्त फसलों के लिए फास्फोरस के स्त्रोत सिंगल सुपरफास्फेट अथवा जिप्सम का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि सिंगल सुपर फास्फेट में 11–12 तथा जिप्सम में 18–19 प्रतिशत गंधक होती है।

समस्या- जस्ते का पौधों के पोषण में क्या महत्व है ?

समाधान- जस्ता अनेकों एंजाइमों का एक घटक होता है जैसे कार्बोनिक एनहाइड्रेस, एल्कोहल डिहाइड्रोजेनेस और विभिन्न पेप्टीडेस। अत: यह अनेकों एंजाइमी प्रतिक्रियाओं के लिए आवश्यक होता है। यह वृद्धि हार्मोनों के निर्माण में भी सहायता करता है। जिससे पौधों की बढ़वार अच्छी होती है।

समस्या- क्या जिंक सल्फेट और यूरिया मिलाकर छिड़के जा सकते हैं ?

समाधान- हां, बहुत ही सफलतापूर्वक दोनों को मिलाकर छिड़का जा सकता है। जिंक सल्फेट का घोल तेजाबी होता है। जबकि यूरिया का घोल क्षारीय होता है अत: दोनों को साथ मिलाकर छिड़कने से सामान्य घोल मिलता है। साधारणतया फसलों में जस्ते की कमी के साथ नाइट्रोजन की कमी होती है। अत: दोनों को एक साथ छिड़कने से दोनों की कमी दूर हो जाती है। यदि फसल में नाइट्रोजन की कमी ना हो तो फिर यूरिया का छिड़काव नहीं करें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान
कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

कृषक जगत
बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक रु. 95 कोड : 016
सब्जियों में पौध संरक्षण रु. 75 कोड : 017
मशरूम एक लाभ अनेक रु. 45 कोड : 019
मिर्च की उन्नत खेती रु. 55 कोड : 020
केला उत्पादन रु. 70 कोड : 025
गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण रु. 75 कोड : 027

पपीता रु. 55 कोड : 031
अदरक रु. 55 कोड : 032
फलों की खेती रु. 75 कोड : 040
सजाएं फूलों से बगिया रु. 65 कोड : 041
घर की बगिया रु. 95 कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/ मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं
016 017 019 020 025 027 031 032 034 040 041 050
नाम
ग्राम पोस्ट तह.
जिला फोन/मोबा.
कुल राशि ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या
संलग्न ड्राफ्ट नं. मनी आर्डर रसीद क्र. वी.पी. भेजें
कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

गृह वाटिका में उगायें सर्दी की सब्जियां, प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं

● डॉ. अदिति गुप्ता, विषय वस्तु विशेषज्ञ
(खाद्य एवं पोषण)
कृषि विज्ञान केंद्र, चाँदगोठी, चुरू (राज.)

घर में उपलब्ध स्थान पर घर की आवश्यकता के अनुसार सब्जियों को लगाना गृह वाटिका कहलाता है घर के 5-6 सदस्यों के लिए 250-300 सेमी स्थान की आवश्यकता होती है। सर्दियां शुरू हो चुकी हैं, बाजार में हरी पत्तेदार सब्जियों के साथ ही मौसमी फलों की आवक बढ़ने लगी है, सर्दियों के मौसम में ढेर सारे मौसमी फल और सब्जियां उपलब्ध होते हैं, जो सेहत के लिहाज से काफी स्वास्थ्यप्रद होते हैं। भारतीय औषधीय अनुसंधान परिषद् के अनुसार प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 300 ग्राम सब्जियों का सेवन करना चाहिए जिसमें से 125 ग्राम हरे पत्ते वाली सब्जियां, 100 ग्राम जड़ व कंद वाली सब्जियाँ तथा 75 ग्राम अन्य सब्जियों का सेवन करना चाहिए तथा 120 ग्राम फलों का सेवन करना चाहिए। यदि आपके घर में पर्याप्त जगह है तो आप सर्दी की सब्जियों का लुत्फ़ घरेलु क्यारी से ही उठा सकते हैं इन सब्जियों जगह कम होने पर वर्टीकल गार्डन के रूप में भी उगाया जा सकता है। गृह वाटिका में सर्वाधिक स्थान हरे पत्ते वाली सब्जियों का होना चाहिए तथा छोटे फल के वृक्ष भी लगाये जा सकते हैं।

पालक

हरी पत्तेदार सब्जियों में पालक प्रमुख है। यह हमारे शरीर में लौह तत्व की कमी को पूरा करती है, बीजों को पंक्ति में बोयें व 30-45 दिन में पालक खाया जा सकता है उगने के दो माह बाद तक पालक खा सकते है।

पोषक तत्वः प्रोटीन, विटामिन, फॉस्फोरस, आयरन, कैल्शियम, मेग्निसियम,पोटेशियम।

फायदेः पालक जैसी हरी पत्तेदार सब्जी में विटामिन के और बी प्रचुर मात्रा में होते हैं। शरीर के लिए जरूरी मिनरल्स के साथ ही इसमें फोलिक एसिड और एस्कॉर्बिक एसिड भी होता है। एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटीऑक्सिडेंट तत्व भी पाए जाते हैं।

गाजर

गाजर ठंड के मौसम में ही अधिक उपलब्ध होता है। इसमें विटामिन, एंटी ऑक्सीडेंट और मिनरल्स काफी मात्रा में होते हैं। इसके सेवन से आंखों की रोशनी, त्वचा में चमक बरकरार रहती है। कैल्शियम की मात्रा होने से हड्डियों की दिक्कत दूर होती है।

एनीमिया से बचाता है। कोलेस्ट्राल के स्तर को मेंटेन करता है।

इसके बीजों को क्यारी की मेड़ बनाकर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बोयें। ढाई महीने में गाजर तैयार हो जाएगी। इसके बाद चार महीने तक गाजर को इस्तेमाल कर सकते हैं।

पोषक तत्वः आयरन, पोटैशियम, विटामिन, कैल्सियम, फाइबर गाजर में सबसे ज्यादा कैरोटीन होता है। इसमें विटामिन सी, डी, बी, ई और के भी काफी होता है। आंखों, स्किन के लिए काफी हेल्दी होता है गाजर का सेवन करना। सर्दियों में स्किन की समस्या से बचने के लिए भी आप इसका सेवन कर सकते हैं।

फायदेः सर्दी- जुखाम व इन्फेक्शन कम होगा व प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

मूली

सर्दियों में मूली काफी मिलती है। इसमें मौजूद

फाइटोकेमिकल्स कई तरह के कैंसर के खतरे से बचाते हैं। विटामिन सी एंटीऑक्सिडेंट की तरह काम करता है। मूली में एंटी-हाइपरटेंसिव गुण मौजूद होता है, जो हाई ब्लड प्रेशर की समस्या को कम करने का काम करता है। बीपी की शिकायत है, तो मूली का सेवन जरूर करें। इसमें पोटैशियम, फोलिक एसिड और एस्कॉर्बिक एसिड भी होते हैं, जो आपको कई शारीरिक समस्याओं से बचाते हैं। सर्दी के मौसम में अक्सर लोगों को खांसी-जुकाम होती रहती है। इसमें प्रोटीन, कैल्शियम, गंधक, आयोडीन व लौह तत्व पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं। इसमें सोडियम, फॉस्फोरस, क्लोरीन व मैग्नीशियम भी होता है। मूली में विटामिन ए भी होता है। ये ब्लड प्रेशर मेंटेन करता है। चेहरे की लालिमा बढ़ती है। इसमें एंटी-कन्जेस्टिव गुण होते हैं, जो कफ, गले की खराश, सर्दी और जुकाम से पीछा दिलाते हैं। इसके बीजों को भी मेड बनाकर उचित दुरी पर बोयें। ताज़ा मूली का स्वाद चार महीनों तक लिया जा सकता है ।

लाल टमाटर से ही तैयार करें रस

टमाटर रस तैयार करने के लिए केवल पौधे पर पका हुआ लाल टमाटर का उपयोग करें धब्बे युक्त हरे तथा अधिक पके हुए पिलपिले टमाटर को अलग कर दें, क्योंकि इसके कारण रस की गुणवत्ता खराब हो सकती है। जूस का उत्पादन, रंग तथा उसके महक टमाटर की परिपक्वता एवं उसकी उगाये जाने वाले समय एवं स्थान पर निर्भर करती है यह निर्धारित करने के लिए टमाटर जूस अच्छी किस्म का है निम्नलिखित बातों का ध्यान रखे। ● जूस गहरे लाल रंग का होना चाहिए। ● जूस में टमाटर का वास्तविक स्वाद एवं गंध होना चाहिए। ● जूस की एसिडिटी साइट्रिक एसिड के रुप में 0.4 प्रतिशत हो। ● ताजे टमाटर में उपस्थित विटामिंस की मात्रा जूस में पहुंच जाती है। जूस में इसकी धारण करने की क्षमता, जूस निकालने की विधि पर निर्भर करता है। यह देखा गया है कि बीटा कैराटीन आक्सीकरण या ऊष्मा के प्रति कुछ हद तक सहनशील है जबकि विटामिन सी की कुछ मात्रा का ह्रास होता है।

● गुणवत्ता में समरसता लाने के लिए टमाटर का एक स्थान और एक ढ़ेर से लें या जूस का उचित मिश्रण करें।

जूस तैयार करने की विधि- *जूस तैयार करने के लिए निम्नलिखित क्रियाएं समायोजित की जाती हैं।*

धोना एवं अनुपयुक्त भाग को अलग करना- *टमाटर को सिर्फ पानी से धो लेना ही पर्याप्त नहीं होता है क्योंकि बहुत सारी गंदगी तथा सूक्ष्म जीव जो कि टमाटर की झुर्रियों, फटे हुए भाग तथा मुड़े हुए व अन्य भागों से चिपके रहते हैं। वे आसानी से केवल पानी से धो लेने से अलग नहीं होते हैं। अच्छी धुलाई के लिए टमाटर को पर्याप्त बहते हुए पानी में धो लें।*

कुचलना- *ट्रिमिंग के बाद टमाटर को 4-6 टुकड़ों में काटते हैं। ताकि उबालने के*

दौरान टमाटर मुलायम हो जाये इसके बाद लकड़ी के बड़े चम्मच से कुचलकर या फ्रूट ब्रशर द्वारा ब्रिशिंग की जाती है।

पल्प तैयार करना- *टमाटर का पल्प दो विधियों से तैयार करते हैं।*

अ-गर्मविधि, ब- ठण्डी विधि

गर्मविधि- *कुचले हुए टमाटर को उसके रस के साथ 3-5 मिनिट तक उबालते हैं जिससे पल्प तैयार करने की क्रिया आसान हो जाती है। इस विधि को निम्न लिखित फायदे है- ● बीज और छिलके में उपस्थित पेक्टिन जूस में मिल जाती है जिससे जूस गाढ़ा हो जाता है। तथा उपस्थित एंजाईम नष्ट हो जाती है। ● उबालने के कारण आंशिक रुप से जूस पाश्चुरीकृत हो जाता है। तथा आक्सीकरण और सड़ाने वाले सूक्ष्मजीव निष्क्रिय हो जाते हैं।*

● जूस का उत्पादन दूसरी विधि की अपेक्षा ज्यादा होता है।

● कम पकाने के कारण छिलके में उपस्थित लाल रंग निकलकर जूस में मिल जाता है।

ठण्डी विधि- *कुचले हुए टमाटर को ठण्डे रुप में ही पल्पर में डालकर पल्प तैयार किया जाता है। इस विधि में निम्न कमियां है-*

● जूस का उत्पादन गर्म विधि की अपेक्षा कम मिलता है।

● जूस निकालने के दौरान जूस में हवा प्रवेश कर जाती है। जिसके कारण विटामिन सी का आक्सीकरण हो जाता है।

● इस विधि से प्राप्त जूस अपेक्षाकृत हल्के रंग का होता है।

● कुचलना तथा पल्प तैयार करने की क्रिया शीघ्रता से सम्पन्न करनी पड़ती है जिससे कि शुरू में सूक्ष्म जीवों द्वारा सड़ने से रोका जा सकें। ● इसमें अच्छी ताजी गंध पाई जाती है।

जूस प्राप्त करना- *व्यावसायिक विधि तथा घरेलू विधि से जूस प्राप्त करने के लिए व्यावसायिक तौर पर दो विधियां उपयोग में लाई जाती है।*

अखरोट भगाए कैंसर, मधुमेह

सेहत के लिहाज से अखरोट को बहुत अच्छा माना जाता है। इसे खाने से हृदय विकार, कैंसर और मधुमेह जैसी कई बीमारियों को रोकने में मदद मिलती है। हाल ही में हुए एक शोध में शोधकर्ताओं का दावा है कि अखरोट या उससे परिपूर्ण भोज्य पदार्थ खाने से भारत में व्याप्त हृदय विकार, कैंसर और मधुमेह जैसी कई बीमारियों को रोकने में मदद मिल सकती है। वहीं, कैलिफोर्निया वालनट कमीशन द्वारा आयोजित वैज्ञानिक अनुसंधान बैठक में बीमारी की रोकथाम में अखरोट की भूमिका और स्वस्थ्य जीवनशैली को बनाए रखने पर हुई चर्चा में यह बात सामने आई है।

पाक्षिक पंचांग

24 नवम्बर से 7 दिसम्बर 2025
विक्रम संवत् 2082
अगहन शुक्ल 4 से पौष कृष्ण 3 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार	
24	नवम्बर	सोम	अगहन शुक्ल	4	विनायकी चतुर्थी व्रत
25	नवम्बर	मंगल	-----------	5	विवाह पंचमी
26	नवम्बर	बुध	-----------	6	
27	नवम्बर	गुरु	-----------	7	पंचक 10.2 दिन से
28	नवम्बर	शुक्र	-----------	8	पंचक
29	नवम्बर	शनि	-----------	9	पंचक
30	नवम्बर	रवि	-----------	10	पंचक
01	दिसम्बर	सोम	-----------	11	पंचक 7.31 रात तक
02	दिसम्बर	मंगल	-----------	12	प्रदोष
03	दिसम्बर	बुध	-----------	13	
04	दिसम्बर	गुरु	-----------	14/15	पूर्णिमा
05	दिसम्बर	शुक्र	पौष कृष्ण	1	
06	दिसम्बर	शनि	-----------	2	
07	दिसम्बर	रवि	-----------	3	

123certificates

धान खरीदी व्यवस्थाओं के लिए सभी आवश्यक कदम उठायें : कलेक्टर

जबलपुर (कृषक जगत)। धान उपार्जन की व्यवस्थाओं के संबंध में कलेक्टर श्री राघवेंद्र सिंह की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। बैठक में मुख्य रूप से वेयरहाउस की उपलब्धता और उनमें आवश्यक सुविधाओं को लेकर चर्चा की गई। बैठक में बताया गया कि इस बार की धान उपार्जन की व्यवस्था को बेहतर और पारदर्शी करने के लिए सीसीटीवी की एकीकृत मॉनिटरिंग प्रणाली स्मार्ट सिटी में कंट्रोल रूम बनाकर की जाएगी। इसके लिए आवश्यक निर्देश भी दिए गए। संबंधित अधिकारी को अबाधित विद्युत आपूर्ति और इंटरनेट की सुविधा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। सीसीटीवी के माध्यम से पूरी उपार्जन अवधि के प्रत्येक महत्वपूर्ण विजुअल कंट्रोल रूम में रखे जाएंगे और उपार्जन केंद्रों पर निगरानी रखी जाएगी। इसके अलावा अधिक रकबा वाले किसानों की भूमि के सत्यापन के निर्देश दिए गए। जिला प्रशासन ने जबलपुर को जोड़ने वाले समीपवर्ती जिलों के पहुंच मार्ग पर चेक पोस्ट बनाने का निर्णय लिया है। सिहोरा विकासखंड में दो और पाटन विकासखंड में एक चेक पोस्ट बनाया जाएगा। सभी एसडीएम को निर्देशित किया गया है कि वे अपने-अपने क्षेत्र में उपार्जन केंद्रों की संख्या को एक बार अंतिम रूप से देखें।

किसानों को मंडी में कोई परेशानी न हो: श्री सूर्यवंशी

कलेक्टर ने बडोरा मंडी का किया औचक निरीक्षण

बैतूल (कृषक जगत)। बडोरा मंडी में अव्यवस्थाओं को लेकर मिल रही शिकायतों पर कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने मंडी परिसर में बड़े पैमाने पर खुले में रखे माल को देखकर नाराजगी जताई और कहा कि इस स्थिति के चलते किसानों को अपनी उपज बेचने में परेशानी हो रही है।

कलेक्टर ने मंडी सचिव को स्पष्ट निर्देश दिए कि किसानों को किसी भी प्रकार की दिक्कत न हो और मंडी परिसर में सुव्यवस्थित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। उन्होंने व्यापारियों से चर्चा कर खुले में पड़े मक्का को शीघ्र उठवाने को कहा तथा अधिक संख्या में ट्रक नियोजित कर प्लेटफार्म के पास रखे माल को प्राथमिकता से उठवाने के निर्देश मंडी प्रशासन को दिए। उन्होंने कहा कि वाहनों की आवाजाही की व्यवस्था भी बेहतर की जाए, ताकि किसानों की उपज का विक्रय बिना किसी बाधा के सुगमता से हो सके। कलेक्टर ने किसानों से आत्मीय संवाद कर भरोसा दिलाया कि मंडी की सभी व्यवस्थाओं को जल्द दुरुस्त किया जाएगा। निरीक्षण के दौरान एसडीएम श्री अभिजीत सिंह, मंडी सचिव श्री परते सहित व्यापारी और किसान उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री कृषक मित्र सूर्य योजना में संशोधन की मंजूरी

छिंदवाड़ा (कृषक जगत)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक मंत्रालय में सम्पन्न हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा प्रधानमंत्री कृषक मित्र सूर्य योजना में सिंचाई के लिये सोलर पम्प स्थापना की योजना में संशोधन की स्वीकृति प्रदान की गई है। संशोधन अनुसार कृषकों को स्वीकृत सोलर पम्प स्थापना क्षमता से एक क्षमता अधिक तक का विकल्प प्रदान किया जायेगा। अब 3 एचपी के अस्थाई विद्युत कनेक्शन धारकों को 5 एचपी और 5 एचपी के अस्थाई विद्युत कनेक्शन धारियों को 7.5 एचपी का सोलर पंप प्रदाय करने का विकल्प दिया जाएगा। योजना अनुसार 7.5 एचपी क्षमता तक का सोलर पम्प पम्प लगाने के लिए अस्थाई विद्युत कनेक्शन धारी कृषक का अंश 10 प्रतिशत रहेगा। शासन द्वारा 90 प्रतिशत की सब्सिडी दी जाएगी।

उल्लेखनीय है कि भारत सरकार की कुसुम-ब योजना को प्रदेश में 'प्रधानमंत्री कृषक मित्र सूर्य योजना' नाम से 24 जनवरी 2025 से लागू किया गया है। इसका क्रियान्वयन राज्य में मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम द्वारा किया जा रहा है। इस निर्णय से सोलर पंप की स्थापना से विद्युत पंपों को विद्युत प्रदाय के लिए राज्य सरकार पर अनुदान के भार को सीमित किया जा सकेगा एवं विद्युत वितरण कंपनियों की वितरण हानियों को कम किया जा सकेगा।

आधुनिक कृषि तकनीक की ओर कदम

सुमित ने की सुपर सीडर मशीन से बोनी

विदिशा (कृषक जगत)। विदिशा जिले के विकासखण्ड विदिशा अंतर्गत ग्राम भाटनी में कृषि क्षेत्र में तकनीकी उन्नयन का एक महत्वपूर्ण उदाहरण देखने को मिला। ग्राम के प्रगतिशील कृषक श्री सुमित मीणा के खेत में सुपर सीडर मशीन के माध्यम से बोनी की गई, जिसे उन्होंने शासन की अनुदान योजना के अंतर्गत प्राप्त किया है।

सुपर सीडर मशीन एक उन्नत कृषि उपकरण है, जो अवशेष प्रबंधन (स्टबल मैनेजमेंट) के साथ-साथ कम समय और लागत में उच्च गुणवत्ता वाली बोनी करने में सक्षम है। इस मशीन से खेत की जुताई, अवशेषों का प्रसंस्करण और बीज की बुवाई एक साथ संपन्न हो जाती है, जिससे किसान को समय, श्रम और लागत तीनों में बचत होती है। कृषक श्री सुमित मीणा ने बताया कि अनुदान पर सुपर सीडर मशीन प्राप्त होने से उन्हें आधुनिक कृषि तकनीक अपनाने में बड़ी मदद मिली है।

कृषि विभाग के स्थानीय अधिकारियों ने भी स्थल निरीक्षण कर किसान को तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया। अधिकारियों ने कहा कि सरकार द्वारा उपलब्ध कराए जा रहे उन्नत कृषि यंत्रों पर अनुदान योजनाओं का उद्देश्य किसानों को आधुनिक खेती की ओर प्रेरित करना है, ताकि उत्पादन क्षमता और आय में वृद्धि हो सके। ग्राम भाटनी में सुपर सीडर मशीन से की गई यह बोनी ग्रामीण क्षेत्र में तकनीकी जागरूकता का प्रतीक बन रही है और अन्य किसानों को भी उन्नत कृषि उपकरण अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर रही है।

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
- वार्षिक रु. 600/-
- दो वर्ष रु. 1000/-
- तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से 'कृषक जगत' - प्रति सप्ताह ◻ भोपाल ◻ जयपुर ◻ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम ....

ग्राम .... पो. ....

डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....

वि.ख. .... तह. ....

जिला .... पिन ◻◻◻◻◻◻ राज्य ....

शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....

ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....

ई-मेल ....

मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/ मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php

Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793,
Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861

कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.), मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403, आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

श्री संतोष सिंह सेवानिवृत्त

सीहोर (कृषक जगत)। कृषि विभाग में सेवा के दौरान अपने कर्तव्यों के प्रति हमेशा सजग रहने वाले एवं मिलनसार कृषि विकास अधिकारी श्री संतोष सिंह गत दिवस सेवानिवृत्त हुए। कार्यक्रम में जिले के उप संचालक कृषि श्री ए. के. उपाध्याय ने अपने सम्बोधन में श्री सिंह के विभाग को दिए योगदान की सराहना की एवं उनके शेष जीवन को सुखमय, स्वस्थ हो शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर सहायक संचालक कृषि श्री अनिल जाट, श्रीमती मिनी चौकसे,वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्री ठाकुर, कृषक जगत के विशाल गंगराड़े सहित जिले के कृषि अधिकारी, निजी संस्थाओं के संचालक उपस्थित थे।

कोदो प्रोसेसिंग इकाई का लिया जायजा

अनूपपुर (कृषक जगत)। जिले में कोदो मिलेट की प्रचुर मात्रा में उत्पादन तथा कोदो उत्पादक किसानों को उपज का बेहतर मूल्य प्रदान करने एवं मूल्य संवर्धन को दृष्टिगत रखते हुए जिला प्रशासन अनूपपुर द्वारा कोदो मिलेट के प्रसंस्करण हेतु जिले में अत्याधुनिक प्रोसेसिंग यूनिट की स्थापना हेतु कलेक्टर श्री हर्षल पंचोली के दिशा निर्देशानुसार कार्य किया जा रहा है।

इसी तारतम्य में जिला पंचायत की मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती अर्चना कुमारी ने ग्राम बटुरा में संचालित कोदो प्रोसेसिंग इकाई का भ्रमण कर इकाई स्थापना एवं संचालन के संबंध में आवश्यक जानकारियां प्राप्त की। भ्रमण के दौरान आजीविका मिशन के जिला परियोजना प्रबंधक श्री शशांक प्रताप सिंह, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के कार्यपालन यंत्री श्री अमर साय,आकांक्षी ब्लॉक पुष्पराजगढ़ के फेलो राजस्विनी शर्मा उपस्थित थे।

पांढुर्ना में जैविक एवं घरेलू उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई

(उमेश खोड़े, कृषक जगत, पांढुर्ना)। ग्रीन फाउंडेशन संस्था द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में जिले के किसानों द्वारा तैयार किए गए जैविक उत्पाद, देसी बीज, जीवामृत, घनजीवामृत के साथ-साथ SHC समूह द्वारा निर्मित पापड, बड़ी, अचार, चिप्स, आटा सहित विभिन्न घरेलू उत्पादों का प्रदर्शन किया गया।

कलेक्टर श्री नीरज कुमार वशिष्ठ ने प्रदर्शनी का निरीक्षण कर सभी उत्पादों का अवलोकन किया। उन्होंने स्थानीय किसानों और महिला स्व-सहायता समूहों द्वारा तैयार किए गए उत्पादों की विविधता और गुणवत्ता की सराहना की।

कलेक्टर श्री वशिष्ठ ने कहा कि प्राकृतिक एवं जैविक उत्पादों को बढ़ावा देना न केवल किसानों की आय वृद्धि का माध्यम है, बल्कि यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने और सतत कृषि को प्रोत्साहित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

पराली प्रबंधन में युवा किसान की भूमिका

श्योपुर (कृषक जगत)। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा द्वारा पराली फ्री डिस्ट्रिक्ट को लेकर चलाई गई मुहिम को युवा किसानों का सहयोग मिल रहा है, प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण के साथ ही युवाओं के लिए यह अवसर रोजगार भी प्रदान कर रहा है। ग्राम ज्वालापुर के युवा श्री इरफान खान एक ऐसे युवा हैं, जिन्होंने पराली प्रबंधन के जरिये रोजगार की दिशा में नवाचार करते हुए अपने कदम बढ़ाएं हैं, जिसका प्रतिफल भी उन्हें खूब मिल रहा है। सामाजिक सरोकार और प्रकृति, पर्यावरण में अपना योगदान प्रदान कर, श्री इरफान खान किसानों के खेतों में पराली का नि:शुल्क प्रबंधन कर रहे हैं। पराली काटने के लिए वे किसानों से किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं ले रहे हैं और

वैज्ञानिक तरीके से धान की कटाई के बाद पराली को काटकर आगामी रबी फसल गेहूं के लिए तैयार कर रहे हैं।

श्री इरफान खान ने बताया कि जिला प्रशासन की पराली प्रबंधन की मुहिम से प्रभावित होकर उन्होंने कृषि विभाग के माध्यम से ई-कृषि अनुदान पोर्टल पर बेलर के लिए आवेदन किया तथा 50 प्रतिशत सब्सिडी पर बेलर खरीदा, उन्होंने 8 लाख 67 हजार रुपये की राशि पूंजी के रूप में बेलर खरीदने के लिए निवेश की, लगभग इतनी ही राशि मध्य प्रदेश की सरकार द्वारा उन्हें प्रदान की गई। अनुमानित 15-16 लाख रुपये लागत का बेलर उन्हें प्रदान किया गया, जिसका उपयोग वे अपने क्षेत्र के किसानों के यहां निशुल्क रूप से पराली प्रबंधन के लिए कर रहे है। श्री इरफान ने बताया कि पराली के बंडलों को उनके द्वारा श्योपुर में स्थापित बायोफ्यूल प्लांट को 200 रुपये/क्विंटल की दर से विक्रय किया जा रहा है, जिससे उन्हें मुनाफा मिल रहा है।

उल्लेखनीय है कि कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा द्वारा पराली प्रबंधन के लिए चलाई गई मुहिम के तहत श्योपुर जिले में पहली बार बड़ी संख्या में किसानों ने सुपर सीडर, स्मार्ट सीडर, हैप्पी सीडर अनुदान पर क्रय किये हैं, कुछ किसानों द्वारा बेलर भी क्रय किये गये है।

कृषक जगत की सदस्यता हेतु संपर्क करें
शैलेन्द्र फरक्या, बलराम एंड ब्रदर्स, पिपलिया मंडी, जिला- मन्दसौर, मो. : 9893189345
सतीशचन्द्र शर्मा, मे. शर्मा एग्रो एजेन्सी, पनवाड़ी, जिला-शाजापुर, मो. : 9893296531
विशाल पाटीदार, मे. गायत्री कृषि एवं बीज भंडार, शुजालपुर मंडी, मो. : 8120700900

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता शुल्क मात्र 600 रूपये

कैरा टेक्नोप्लास्ट प्रा.लि., खरगोन
आपकी समृद्धि हमारी प्राथमिकता
हमारे यहां पर ड्रिप में फ्लैट और राउण्ड एचडीपीई व स्प्रिंकलर पाईप, एचडीपीई क्वाइल, लपेटा पाईप एवं रेन पाईप वर्जिन एवं उच्च क्वालिटी में बनाये जाते हैं। **सम्पर्क** - निरंजन नगर, कसरावद रोड, खरगोन, मो. : 7880017028, 7880017021 मई 25

TerraGlebe Farmers Producer Company Limited NIMADFRESH
यूरोप में मिर्च निर्यात (एक्सपोर्ट) करने वाला मध्यप्रदेश का पहला किसान उत्पादक संगठन बना 'टेराग्लेब'
अब उसी की तर्ज पर नाबार्ड से गठित FPO निमाड़फ्रेश FPO रसायन मुक्त मसाले का बना मैन्युफैक्चर
ODOP - मिर्च-खरगोन
निमाड़फ्रेश FPO (JV) हरिओम भुरे 8964087240
टेराग्लेब FPO बालकृष्ण पाटीदार 9575524408
जुलाई 26

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नर्सरी
ISO 9001 : 2015 सर्टिफाईड
किसान हाईटेक ग्रीनहाऊस नर्सरी
द्वारा पपीता, मिर्च, टमाटर, बैंगन, तरबूज, करेला, पत्तागोभी, फूलगोभी आदि सब्जी के पौधे टेबल स्टेण्ड के ऊपर रखकर तैयार किए जाते हैं
सम्पर्क : 9407361901, 9407361902, 9407361903
सहयोगी प्रतिष्ठान : बागवानी बाजार नर्सरी जहां पर फलदार, सजावटी व फारेस्टी पौधों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है। संपर्क : मो. : 9407853117, 9407853118, 9407853119, नर्सरी स्थल : ग्राम-सिरलाय, तह.- बड़वाह 451115, जिला-खरगोन (म.प्र.) मार्च 25

मध्यभारत की सबसे बड़ी नर्सरी
तिरुपति ग्रीन हाउस नर्सरी
देश का सबसे बड़ा पौध भंडार औषधीय, फलदार, सजावटी फूलों के पौधे, इनडोर, टिश्यूकल्चर, क्रौपर, बोन्साई, सक्यूलेन्ट्स, केक्टस, हैंगिंग प्लांट, वर्टीकल प्लांट, लकी बैंबू रेंज, फॉरेस्ट्री प्लांट एवं सब्जियों के पौधों की विस्तृत श्रृंखला में
: आपका स्वागत है :
सिरलाय (बड़वाह) मध्यप्रदेश
www. tirupatinursery.com
email : tirupatinursery@gmail.com
मो. : 9479457720/99/63/86/96/16/17/13/31/51
मार्च 2025

पटवारी एग्रो एजेन्सी
:: वितरक ::
◆ कलश सीड्स लि. ◆ बायोस्टेट इंडिया लि. ◆ बॉयर कॉप साइंस ◆ धानुका एग्रीटेक लि. ◆ एफ.एम.सी. इंडिया प्रा.लि. ◆ घरड़ा केमिकल्स लि. ◆ अतुल एग्रीटेक लि. ◆ रामा फॉस्फेट्स लि. ◆ जी.एन.एफ.सी. ◆ इंसेक्टीसाइड्स इंडिया लि. ◆ बीएएसएफ ◆ ड्यूपॉन्ट इंडिया लि. ◆ क्रिस्टल क्राप साइंस ◆ डाउएग्रो साइंसेस ◆ एग्री सर्च इंडिया ◆ मंशा इंडिया लि. ◆ स्वाल कार्पोरेशन लि. ◆ मेघमनी आर्गेनिक्स ◆ अदामा इंडिया लि.
17, विशाल टॉवर, इंदिरा काम्पलेक्स, नवलखा चौराहा, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2403694, 2400412, मो. : 9425077083

कई प्रकार की फसलों के लिए एकमात्र स्वचलित गियर ड्राईव
वरदान
मल्टीक्रॉप पॉवर रीपर
वरदान एग्री सॉल्यूशन्स प्रा.लि.
63, पोलोग्राउण्ड, इन्दौर-452015 (म.प्र.) फोन: 0731-4970600, 6264916090.

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ
व्यक्तिगत क्लासीफाइड
विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि ▪ बीज ▪ औषधीय फसल
विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक ▪ अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड
विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण जीएसटी 5%अतिरिक्त
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.
कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्राएं, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagatindia
@krishakjagat @krishak_jagat

राज्यपाल ने कृषि महाविद्यालय परिसर में विकास कार्यों का लोकार्पण किया

इंदौर (कृषक जगत)। राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल ने गतदिनों इंदौर के कृषि महाविद्यालय में विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया। कृषि महाविद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने जननायक टंट्या भील बालक छात्रावास, एरोपोनिक्स यूनिट, महाविद्यालय के मुख्य द्वार, ऑडिटोरियम और कन्या छात्रावास के नवीनीकरण कार्य का लोकार्पण तथा नवीन कन्या छात्रावास भवन का शिलान्यास भी किया। राज्यपाल श्री पटेल ने अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में गत 11 वर्षों में देश में कृषि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हुए हैं। इससे देश में कृषि उत्पादन बढ़ा है और किसानों की आय में वृद्धि भी हुई है। उन्होंने कृषि महाविद्यालयों में छात्रों के साथ-साथ छात्राओं की संख्या में लगातार वृद्धि पर प्रसन्नता व्यक्त की।

राज्यपाल श्री पटेल ने कृषि महाविद्यालय में कृषि के क्षेत्र में किये जा रहे नवाचारों की सराहना करते हुए कहा कि रासायनिक उर्वरकों और रासायनिक कीटनाशकों के माध्यम से की जा रही खेती से कृषि भूमि एवं किसानों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर होता है। इसलिए सरकार जैविक खेती एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दे रही है। कार्यक्रम में राज्यपाल श्री पटेल ने मोटे अनाज पर केंद्रित पोस्टर का विमोचन भी किया। इस अवसर पर राजमाता विजया राजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के कुलगुरु श्री अरविंद शुक्ला, दलहन अनुसंधान केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. ए.के. तिवारी तथा इंदौर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. भरत सिंह भी मौजूद थे।

इससे पूर्व कृषि विश्वविद्यालय के कुलगुरु श्री शुक्ला ने कहा कि इंदौर का कृषि महाविद्यालय वर्ष 1924 में स्थापित हुआ था। इस महाविद्यालय की स्थापना को लगभग 101 वर्ष हो चुके हैं। इस कॉलेज में दलहन और प्राकृतिक खेती के क्षेत्र में लगातार अनुसंधान किये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि इंदौर के कृषि महाविद्यालय में सभी विद्यार्थी 'ग्रीन ग्रेजुएशन कार्यक्रम' के तहत महाविद्यालय परिसर में 'एक पेड़ मां के नाम' नियमित रूप से लगाते हैं और उसका पालन पोषण भी करते हैं।

कोरोमंडल ने विदिशा जिले में नैनो डीएपी पर पैनल चर्चा आयोजित की

इंदौर (कृषक जगत)। देश की प्रतिष्ठित कंपनी कोरोमंडल इंटरनेशनल लि. द्वारा गत दिनों विदिशा जिले में नैनो डीएपी पर पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। इस पैनल चर्चा में विदिशा जिले के 62 प्रगतिशील किसानों और कृषि से संबंधित अधिकारियों ने भाग लिया।

इस गतिविधि के प्रमुख पैनलिस्ट डॉ. वी. के. गर्ग, डीन, कृषि महाविद्यालय, गंजबासौदा, डॉ. पी. के. जग्गा, मृदा वैज्ञानिक, विभागाध्यक्ष,श्री के. एस. खपेड़िया, डीडीए, विदिशा, श्री महेंद्र ठाकुर, एडीए, विदिशा थे। इन वक्ताओं ने नैनो डीएपी की विशेषता,लाभ आदि पर प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम में सर्वश्री हरीश कुशवाह एवं हरीश रघुवंशी प्रगतिशील किसान, अमित मिश्रा, संभागीय कृषि विज्ञानी, मध्य संभाग, एस. के. त्रिपाठी, आंचलिक प्रबंधक (भोपाल), अमित जैन, बीडीएम सेंट्रल डिवीजन, उत्कर्ष तिवारी, विपणन अधिकारी, अशोक नगर, मुकेश बिड़ला कृषि विज्ञानी, एमडीटी दीपक सेन एवं लवकुश पचोरिया भी उपस्थित थे। प्रगतिशील किसानों ने अपने अनुभव साझा किए।

डीडीए श्री खपेड़िया ने कोरोमंडल टीम को खेतों में नैनो तकनीक को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया और हमसे बड़ी संख्या में प्रदर्शन, फील्ड डे और प्रशंसापत्र वीडियो की योजना बनाने का अनुरोध किया। उन्होंने इस गतिविधि के लिए विदिशा जिले को चुनने के लिए सीआईएल टीम के के प्रति आभार प्रकट किया। किसान श्री बुंदेल सिंह ने बताया कि धान को शाकनाशी के कारण नुकसान हुआ था और उसके बाद उन्होंने सीआईएल ग्रोमोर नैनो डीएपी पर भरोसा किया, जिससे न केवल उनकी फसल बच गई, बल्कि उन्हें नुकसान की भरपाई में भी मदद मिली। पैनलिस्ट किसान ने हमें बताया कि ग्रोमोर नैनो डीएपी में 50 प्रतिशत थोक डीएपी के उपयोग की जगह लेने की क्षमता है और इससे उनकी लागत और मृदा स्वास्थ्य में बचत हुई है। सहायक उप संचालक कृषि ने ग्रोमोर नैनो डीएपी के प्रचार के लिए ग्राम पंचायत स्तर पर ये कार्यक्रम आयोजित करने का अनुरोध किया। अंत में, इस कार्यक्रम में किसान लकी ड्रा योजना (ग्रोमोर नैनो डीएपी) के उपहार विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया।

नाबार्ड की प्रदेश स्तरीय बैठक संपन्न

छिंदवाड़ा (कृषक जगत)। नाबार्ड की सीजीएम श्रीमती सी. सरस्वती की अध्यक्षता में नाबार्ड की प्रदेश स्तरीय संरचनात्मक बैठक विकासखंड तामिया में आयोजित हुई।

इस बैठक में प्रदेश के समस्त जिलों के डीडीएमएस उपस्थित थे। बैठक में सहायक कृषि यंत्री छिंदवाड़ा द्वारा नरवाई प्रबंधन विषय पर सभी डीडीएमएस से परिचर्चा एवं कार्यशाला की गई। सहायक कृषि यंत्री श्री समीर पटेल ने सभी अधिकारियों को नरवाई जलाने के दुष्परिणाम एवं नरवाई प्रबंधन के वैकल्पिक उपायों से अवगत कराते हुए जिले में कलेक्टर श्री हरेंद्र नारायन के मार्गदर्शन में नरवाई प्रबंधन के क्षेत्र में किए गए सकारात्मक प्रयासों से अवगत कराया।

श्री पटेल ने जिले के सभी महत्वपूर्ण फसलों जैसे धान, मक्का एवं गेहूं की नरवाई प्रबंधन के लिये आवश्यक यंत्रों एवं तकनीकों के बारे में विस्तृत चर्चा की साथ ही बताया कि जिला प्रशासन व कृषि एवं सह सम्बद्ध विभाग के संयुक्त प्रयासों से जिले में एक वर्ष में 300 से अधिक कृषकों द्वारा नरवाई प्रबंधन में सहायक कृषि यंत्र सुपर सीडर क्रय किया, जिससे इस सीजन जिले में नरवाई में आग लगाने की घटनाओं में प्रशंसनीय कमी आई। नाबार्ड के समस्त जिला अधिकारियों द्वारा नरवाई प्रबंधन के लिये जिले में किए गए प्रयासों की सराहना की गई एवं छिंदवाड़ा मॉडल पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

सोयाबीन खरीदी : भावांतर नहीं एमएसपी से हो...

● मधुकर पवार, मो.: 8770218785

मीडिया की खबरों के अनुसार भोपाल, इंदौर, सागर, उज्जैन सहित अनेक स्थानों पर पिछले वर्ष की तुलना में दोगुने सोयाबीन की आवक दर्ज की गई है। भावांतर योजना के तहत बिका हुआ सोयाबीन फिर से मंडियों में बिकने के लिए आ गया है और इसमें व्यापारियों की मिलीभगत होने के सबूत मिलने पर प्रशासन ने कार्रवाई भी की है। मंडी बोर्ड के प्रबंधक निदेशक के अनुसार प्रशासन ने पांच व्यापारियों के लाइसेंस निरस्त कर दिए हैं तथा दो व्यापारियों पर एफआईआर दर्ज की गई है। इससे इस आशंका क़ो बल मिल रहा है कि व्यापारी जानबूझकर सोयाबीन के भाव नहीं बढ़ा रहे हैं।

सरकार को चाहिए कि वह यह जानकारी प्राप्त करे कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सोयाबीन के भाव क्या है और भारत में व्यापारियों द्वारा खरीदी की जा रही सोयाबीन के मूल्य में कितना अंतर है? इससे स्पष्ट हो जाएगा कि व्यापारी द्वारा की जा रही खरीदी मूल्य सही है या जानबूझकर मूल्य तो नहीं बढ़ा रहे हैं। जब सरकार ने स्वयं सोयाबीन के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित किया है तो इसमें काफी कम मूल्य पर कैसे बिक्री हो रही है? ऐसा भी नहीं है कि उत्पादन बहुत ज्यादा हो गया है और मांग न्यूनतम स्तर पर आ गई है। इसके लिए सरकार को एक समिति का गठन करना चाहिए जो निष्पक्ष रूप से आकलन करे। सभी व्यापारियों के गोदामों की ऑनलाइन निगरानी की व्यवस्था भी की जा सकती है ताकि एक बार बिका हुआ सोयाबीन पुनः मंडी में बिक्री के लिए नहीं आ पाए।

> **कृषक जगत ने पिछले दिनों आशंका व्यक्त की थी कि भावांतर योजना का दुरुपयोग हो सकता है। यह आशंका सही सिद्ध हुई जब मीडिया में खबरें आई कि सोयाबीन की खरीदी में काफी अनियमितता हो रही है और व्यापारी वर्ग इसका फायदा उठा रहे हैं। इस वर्ष अभी तक मिली जानकारी के अनुसार पिछले वर्ष की तुलना में दोगुनी खरीदी हो चुकी है। भावांतर योजना के लागू होने से सोयाबीन के भाव कभी भी नहीं बढ़ेंगे भले ही सोयाबीन की मांग बढ़ रही हो। सोयाबीन की आवक एकदम कम होने पर ही कीमत बढ़ेगी लेकिन अभी तक के परिदृश्य को देखते हुए यही लग रहा है कि इससे किसानों को होने वाले नुकसान की भरपाई तो सरकार कर रही है लेकिन इसका सीधा फायदा व्यापारियों को ही हो रहा है।**

कृषक जगत ने छिंदवाड़ा और देवास के सोनकच्छ क्षेत्र के कुछ किसानों से बात की तो पता चला कि अति वर्षा और कम बारिश के चलते किसानों ने बहुत कम उत्पादन होने की आशंका के कारण रोटावेटर चला कर खड़ी फसल में जुताई कर दी है। ऐसा प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में भी होने की संभावना है। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि उत्पादन या तो पिछले वर्ष के आसपास ही हुआ होगा या कम भी हो सकता है तो मंडियों में करीब सौ फीसदी अधिक आना संदेह तो पैदा करता है। कुछ किसानों ने तो यहां तक कहा कि मंडी में जो सोयाबीन बिक्री के लिए आ रहा है, व्यापारियों द्वारा अपने गोदाम में स्टाक किया हुआ सोयाबीन हो सकता है। भावांतर योजना के क्रियान्वयन में हो रही गड़बड़ी पर रोक लगाने और पूरी पारदर्शिता के साथ खरीदी करने की व्यवस्था करनी चाहिए। भावांतर योजना के तहत पंजीयन करते समय कितने रकबे में सोयाबीन की फसल की बोवनी की गई है इसका उल्लेख करना अनिवार्य कर देना चाहिए और इसकी आकस्मिक जांच भी की जानी चाहिए ताकि जितनी भूमि पर फसल की बोवनी की जानकारी दी गई है, उसकी पुष्टि की जा सकेगी।

किसान अपनी पूरी ज़मीन पर केवल सोयाबीन क़ी ही फसल की बोवनी करें ऐसा भी संभव नहीं है अतः इस बिंदु पर भी ध्यान देने क़ी आवश्यकता है क्योंकि किसानों की आड़ में बिचौलिए फायदा उठाने से नहीं चूकते। इसके साथ ही फसल की बोवनी के बाद ही भावांतर योजना के तहत पंजीयन कराया जा सकता है। यदि कीमतें एमएसपी के स्तर पर रहती है तो इस योजना के तहत खरीदी करने की बाध्यता नहीं रहेगी। इन सबके अलावा बेहतर तो यही होगा कि सोयाबीन क़ी न्यूनतम समर्थन मूल्य पर ही खरीदी करने की बाध्यता हो। इससे किसान, व्यापारी और सरकार, तीनों को ही परेशानी नहीं होगी।

कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं के लिए संदर्भ ग्रंथ

वर्ष भर कृषि सेवाओं और उत्पादों के प्रचार हेतु सर्वोत्तम माध्यम

50 वर्षों से निरंतर प्रकाशित

नए आकार, नए कलेवर में

(एग्जीक्यूटिव डायरी)

कृषक जगत डायरी - 2026

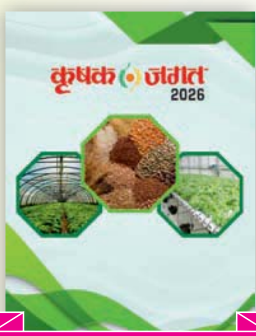

बुकिंग प्रारंभ

प्रमुख आकर्षण

- कृषकों के लिए सरकारी योजनाओं की उपयोगी जानकारी।
- प्रमुख फसलों की नई किस्मों के साथ सम्पूर्ण जानकारी।
- कृषि विभाग के महत्वपूर्ण अधिकारियों के नाम, फोन नंबर ।
- कृषकों के लिए सरकारी योजनाओं की उपयोगी जानकारी ।
- कृषि इनपुट से संबंधित नए उत्पादों की जानकारी ।
- बागवानी, पशु चिकित्सा, कृषि यंत्र की संपूर्ण जानकारी ।
- पंचांग, कैलेण्डर, त्यौहारों, लोक मेलों की जानकारी ।

विज्ञापन एवं डायरी खरीदी के लिए संपर्क करें

इंदौर	:	सचिन बोन्द्रिया	:	9826021837
		इंदौर कार्या.	:	9826024864
भोपाल	:	अजय बोन्द्रिया	:	9826255861
नई दिल्ली / जयपुर	:	निमिष गंगराड़े	:	7387422952
रायपुर	:	प्रेमप्रकाश सुल्लेरे	:	9826255862
ई-मेल	:	info@krishakjagat.org		
		हेल्पलाईन	:	6262166222

कृषि आदान-यंत्र निर्माताओं, विक्रेताओं, ट्रैक्टर डीलरों की नववर्ष उपहार के लिए पहली पसंद

कृषक जगत के नियमित सदस्यों के लिए उपहार*
अपना उपहार सुनिश्चित पाने के लिये संपर्क करें

* नियम व शर्तें लागू।

विशेष - मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान कृषि पर विशेष जानकारी